अप्रैल२०२०-जनवरी-२०२१ ◆ वर्ष ९ ◆ अंक ०९ ◆ उदयपुर

ओ३म्

सत्यार्थ सौरभ

मासिक

अप्रैल२०२०, जनवरी२०२१

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास

नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर–313001 (राज.)

₹90

महाशय धर्मपाल का निधन मानवता की अपूरणीय क्षति।

मृत्यु शाश्वत है। परंतु जो महामना अपने जीवन को मानवता के संरक्षण, संपोषण के लिए समर्पित कर देते हैं वे यशस्वी बनकर अमरत्व को प्राप्त कर लेते हैं। यदि महापुरुषों का जीवन आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रकाशस्तंभ का कार्य करते हुए पथप्रदर्शन का कार्य करता है तो निश्चित ही महाशय धर्मपाल जी गुलाटी का जीवन ऐसा ही रहा।

विभाजन की विभीषिका के पश्चात् जब युवा धर्मपाल दिल्ली आए तो उनकी जेब में मात्र ७०० रु. ही थे। बहुत सोचा कि स्यालकोट में इतने बड़े व्यवसाय को छोड़ कर आये हैं तो अब क्या कुछ करें? परंतु धर्मपाल जी किसी कार्य को छोटा नहीं समझते थे। आज का युवा अगर इस एक बिंदु को ही आत्मसात करले तो उसका जीवन बदल सकता है। तो धर्मपाल जी ने एक घोड़ा खरीदा और दिल्ली की सड़कों पर तांगा चलाने लगे।

उनकी आगे की कहानी तो दृढ़ संकल्प, सघन पुरुषार्थ, लक्ष्य प्राप्ति की अदम्य चाह और ईमानदारी की बेमिसाल कहानी है, जिसने धर्मपाल जी को मसालों का बेताज बादशाह बना दिया।

वेद भी यही कहता है कि प्रथम अपने पुरुषार्थ से धर्मपूर्वक अर्जित करो, अर्जित करे की वृद्धि करो और फिर उसको मानवता के हितार्थ समर्पित कर दो। महाशय धर्मपाल जी ने हूबहू यही किया। कठोर परिश्रम से पुश्तैनी व्यापार को विश्वभर में स्थापित किया, यही नहीं उनका ब्रांड शुद्धता का प्रतीक बन गया।

अर्जन अब हो गया, प्रभूत हो गया। अब जनहितार्थ वितरण की तैयारी थी। महाशय धर्मपाल जी ने अपने जीवन को हवन बना दिया। 'इदं न मम' यह मेरा नहीं है, प्रभु ने दिया है तो प्रभु का ही है। अतः प्रभु की प्रजा को देना सबसे बड़ा कर्तव्य है। इसी सोच ने सैंकड़ो जनहित में संलग्न संस्थाओं का पोषण किया, जिनमें अस्पताल, शिक्षण संस्थाएं, अनाथालय, बालिका आश्रम आदि सम्मिलित हैं। एक भी ऐसा व्यक्ति मिलना असंभव है जो सहाय का इच्छुक हो महाशय जी के पास गया हो और खाली हाथ लौटा हो। इसमें भी सर्वोपरि अनुकरणीय बात यह कि अभिमान महाशय जी को स्पर्श करने से डरता ही रहा।

महाशय जी का यही कथन था- 'भगवान की माया उसकी प्रजा को समर्पित।'

महाशय धर्मपाल गुलाटी की समाज सेवा को मान्यता प्रदान करते हुए भारत सरकार ने उन्हें पद्मभूषण पुरस्कार से समादृत किया।

महाशय जी महर्षि दयानन्द सरस्वती की वैचारिक क्रांति व इनके द्वारा स्थापित मानवीय मूल्यों के प्रबल समर्थक थे अतः स्वाभाविक था कि आर्यसमाज के मिशन के अग्रप्रसारण में उनके व्यक्तित्व, कृतित्व व उनकी दान सरिता का मुख्य भाग होता। अंतिम श्वांस तक वे इसके लिए जीते रहे। उनका दिल समाज के शोषितों और वंचितों के लिए धड़कता था। नितान्त ग्राम्य आदिवासी अंचलों में अपने पुरुषार्थ से धर्मपूर्वक अर्जित धन से उन्होंने जगह-जगह शिक्षा की ज्योति जलाई। भारतीय मनीषा को प्रबुद्ध करने हेतु अनेक गुरुकुल उनके द्वारा पोषित हो रहे थे। देश का युवा अभाव के कारण निज प्रतिभा के प्रदर्शन से वंचित न रह जाय इस ओर भी वे सचेष्ट थे। 'महाशय धर्मपाल प्रतिभा विकास संस्थान' के प्रकल्प की स्थापना कर प्रत्येक बालक पर लाखों रुपये खर्च कर रहे थे ताकि कोई भी प्रतिभाशाली छात्र-छात्रा धनाभाव के कारण अवसर से वंचित न रह जाय।

उदयपुर महाशय जी के हृदय में विशेष स्थान रखता था। उसके दो प्रमुख कारण थे। प्रथम तो प्रातःस्मरणीय महाराणा प्रताप की कर्मभूमि होने के कारण, दूसरे युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द द्वारा लिखित कालजयी ग्रंथ सत्यार्थप्रकाश की रचनास्थली होने के कारण।

महाशय जी सन् २००६ में उदयपुर आये तो यहां से पूर्णतः जुड़ गए। एक दिन नवलखा स्थित यज्ञशाला में प्रातः यज्ञ के पश्चात् अनायास कह उठे कि स्वर्गभूमि तो यह है, इसके विकास में धन का सदुपयोग होना ही चाहिए।

सुविदित ही है कि राज्य सरकार ने गुलाब बाग, उदयपुर स्थित नवलखा महल १९९२ में एक भव्य स्मारक बनाने हेतु आर्यसमाज को सौंपा था। इस संस्था के संचालन हेतु श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास का गठन किया। २००७ में बच्चों में वैदिक संस्कृति का आरोपण किया जाय, इस उद्देश्य से महाशय जी ने भव्य वातानुकूलित 'माता लीलावन्ती सभागार' का निर्माण कराया जिसका लोकार्पण स्मृतिशेष महामहिम उपराष्ट्रपति भैरोंसिंह जी शेखावत ने किया।

न्यास के तत्कालीन अध्यक्ष कै. देवरत्न जी के प्रतिकूल स्वास्थ्य के कारण जब न्यास ने महाशय जी से अध्यक्ष पद स्वीकार करने की प्रार्थना की तो उन्होंने कृपापूर्वक सहज भाव से स्वीकृति प्रदान कर दी। २००८ में, भव्य सत्यार्थप्रकाश स्तम्भ निर्माण हेतु ईसवाल कुमावतों का गुड़ा में एक भूमि क्रय की गयी। ६० करोड़ की यह योजना उदयपुर के पर्यटन व सांस्कृतिक वैभव का अभिन्न अंग होती। कतिपय कारणों से कुछ बिलम्ब हुआ पर गत दिनों में कुछ परिवर्तन के साथ यह कार्य परियोजना के रूप में पूर्णता प्राप्त कर रहा था, साथ ही वर्तमान नवलखा महल अकल्पनीय सौंदर्य के साथ दर्शकों के लिए सम्मोहक बन जाय, इसकी पूर्ण योजना बनकर, कार्य अग्रिम चरण में प्रवेश करने वाला था कि ....हा! हन्त.. यह वज्रपात हो गया। न्यास अपने अध्यक्ष को खोकर मानो अनाथ ही हो गया है। हम हतप्रभ हैं। अभी तो कुछ सूझ नहीं रहा है, पर चरैवेति चरैवैति के आदर्श का अवलम्बन कर आर्यजगत् पूज्य महाशय जी के इन स्वप्नों को साकार करेगा ऐसी आशा अवश्य है।

महाशय जी की सौम्य छवि, ममतामयी मुस्कान तथा हर विपदा में खेवनहार की भूमिका स्मृतिपटल पर अमिट स्थान बना चुकी है। सैंकड़ों सानिध्य-स्मृतियां उमड़ घुमड़ कर रही हैं। पर अब उनके दर्शन कर स्वयं को ऊर्जस्वित करने का अवसर कभी नहीं मिलेगा यह सोचकर हताशा तो है पर उनके दिग्दर्शित पथ पर आगे बढ़ते जाना है। हम जानते हैं कि यही संकल्प उस महान आत्मा के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि है।

अश्रुपूरित श्रद्धांजलि सहित

अशोक आर्य

ओ३म्

वाणी बोले, लिखे लेखनी,
बिना आपके कैसे,
हो पाता यह सफर यहाँ तक,
बिना आपके कैसे।
अति कृतज्ञ, दाता के आगे,
करे समर्पण जैसे,
'प्रचोदयात्' के लिए प्रभु जी,
नतमस्तक हूँ ऐसे।।

– अशोक आर्य

।।ओ३म्।।

ऋषिवर गाथा गाने निकले,
शब्द हमारे नश्वर,
सौ अंकों में लिख पाए हम,
बस आधा ही अक्षर।
कीर्ति तुम्हारी उच्च हिमालय,
कलम हमारी जर्जर,
वाणी भी गूंगी हो जाती,
नयन अश्रु हैं झर–झर।
पर प्रयास करते रहना है,
संकल्पित हूँ ऋषिवर,
हो जाए यह सफल लेखनी,
दो आशीष गुरुवर।।

– अशोक आर्य

पत्रिका मासिक निकाली,
आर्यों के उत्कर्ष को,
विश्व में लहरा सकें,
वैदिक ध्वजा और धर्म को।
'सत्य का वह अर्थ' जो,
ऋषि ने प्रकाशित है किया,
'सौरभ' वही बस है सुवासित,
कर सकें जो जगत् को।
वर दें प्रभु यह पत्रिका,
स्थापना भी कर सकें,
पतनोन्मुख परिवेश में,
आदर्श जीवन मूल्यों को।।

- अशोक आर्य

अर्थ सहयोग एवं आशीर्वाद

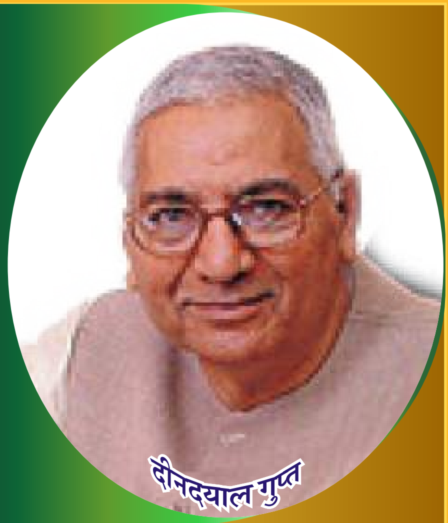

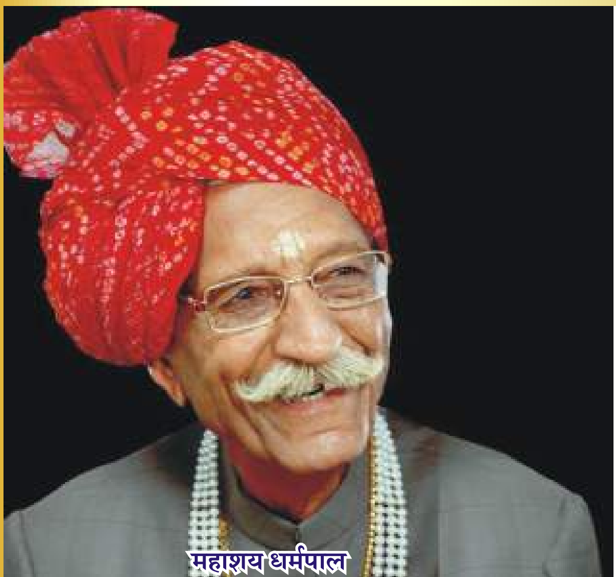

प्रथम अंक से ही सत्यार्थ सौरभ के गेटअप, साज सज्जा पृष्ठों तथा छपाई की क्वालिटी को आर्य जगत् ने प्रशंसित भाव के साथ देखा और आज भी निरन्तर क्वालिटी से कोई भी समझौता किए बिना हम शताङ्क तक ये यात्रा पूरी कर पाए हैं उसमें इन पाँच महानुभावों का आशीर्वाद एवं अर्थ सहयोग सहायक बना है, जिसके बिना ऐसा हो पाना संभव नहीं था। पत्रिका में बहुत ज्यादा विज्ञापन देने के हम प्रारम्भ से ही पक्षधर नहीं हैं। परन्तु दो पृष्ठों के हेतु सदैव–सदैव के लिए पूज्य महाशय जी द्वारा एमडीएच का एवं मान्य बाबूजी दीनदयाल जी द्वारा डॉलर इंडस्ट्रीज का एक–एक विज्ञापन सुरक्षित कर निरन्तर अर्थ सहयोग, सत्यार्थ सौरभ की नींव बनकर खड़ा हुआ है। इन उदारमना महामनाओं का आशीर्वाद सत्यार्थ सौरभ की यात्रा को बहुत आगे तक ले जायेगा ऐसा हमें विश्वास है।

(स्मृतिशेष)
स्वामी तत्त्वबोध सरस्वती

श्री विनय आर्य

सत्यार्थ सौरभ प्रारम्भ करने का निश्चय हमारे लिए अत्यन्त कठिन था। प्रारम्भ करके फिर निरन्तरता और कार्य को अपना 100 प्रतिशत देना हमारे स्वभाव में होने और इस क्षेत्र की कठिनाइयाँ श्रम साध्यता और न्यास के सीमित संसाधनों से भी सुपरिचित होने से इस महत्वपूर्ण कार्य को प्रारम्भ करने में हमें हिचकिचाहट रही। यही कारण था कि पूज्य स्वामी तत्त्वबोध जी सरस्वती के आदेश के बाद भी हम इस कार्य को नहीं कर पाए। जबकि तब स्वामी जी के कारण पूर्ण वित्तीय निश्चिन्तता थी। परन्तु न्यास का अपना मुखपत्र हो उनकी यह अभिलाषा हम पूर्ण नहीं कर पाए और वे इस अभिलाषा को लिए ही संसार से चले गए यह बात सदैव मन को कचोटती थी। यह एक बोझ मन पर बना रहा और वही अन्ततोगत्वा सत्यार्थ सौरभ के जन्म में सर्वोपरि कारक रहा। सन् 2011 के सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव पर आदरणीय भ्राता विनय आर्य जी दिल्ली से पधारे। उन्होंने पत्रिका प्रकाशन हेतु बहुत उत्साहित किया। अगर यह कहूँ कि पत्रिका प्रकाशन के प्रसुप्त बीज को भाई विनय जी ने अंकुरित किया तो अतिश्योक्ति न होगी। इधर स्थानीय न्यासी साथियों से चर्चा में न्यास के संयुक्त मंत्री प्रो. डॉक्टर अमृतलाल जी तापड़िया ने इसे अत्यावश्यक बताते हुए हौंसला अफजाई की। परिणाम यह हुआ कि हमने सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव 2011 के मंच से ही इसकी घोषणा कर दी और सत्यार्थ सौरभ का प्रथम अंक सत्यार्थ सन्देश के नाम से जनवरी 2012 में प्रकाशित हुआ।

डॉ. अमृतलाल तापड़िया

माननीय संरक्षक सदस्यगण

पत्रिका न्यास पर अतिरिक्त बोझ न बने प्रारम्भ से ही ऐसे प्रयत्नों के बारे में हम लोग सोचते रहे और विचार बना कि अगर ग्यारह ग्यारह हजार रु. के एक सौ संरक्षक बन जायें तो यह कार्य काफी आसान हो सकता है। हमारे इस विचार को निम्न पाँच महानुभावों ने जिनके नाम बड़े आदर एवं सम्मान व कृतज्ञता के साथ हम नीचे लिख रहे हैं उन्होंने महोत्सव के समय ही तुरन्त स्वीकार कर उस पथ का निर्माण कर दिया जिस पर गतिमान होकर सत्यार्थ सौरभ अपनी यात्रा निर्विघ्न पूरी कर सके। ये महनीय नाम हैं:– सर्वश्री दीनदयाल गुप्त; कोलकाता, सुरेश चन्द्र अग्रवाल; अहमदाबाद, आनन्द कुमार आर्य; टाण्डा, रामेश्वर दयाल गुप्त; गाजियाबाद एवं श्री रतिमराम जी शर्मा; सिलीगुड़ी। तत्पश्चात् अभी तक 92 संरक्षकों ने अपना आशीर्वाद सत्यार्थ सौरभ को दिया है।

माननीय संरक्षक सदस्यगण

संकल्पित संख्या में अभी आठ नाम जुड़ने शेष हैं। आशा करते हैं कि वर्तमान वर्ष में यह संख्या भी पूरी हो जायेगी।

नोट : जिन संरक्षक महानुभावों के चित्र हमें उपलब्ध नहीं हो पाए उनके केवल नाम नीचे उल्लिखित किए जा रहे हैं। आर्य परिवार संस्था; कोटा (राज.), बृज वधवा; अम्बाला शहर, डॉ. सत्यप्रकाश; हरदोई, श्री कन्हैया लाल आर्य; शाहपुरा, कृष्ण चन्द्र डंग; हिमाचल प्रदेश, श्री नागेन्द्र प्रसाद गुप्ता; बिहार, प्रिन्सीपल डी.ए.वी. एच.जेड.एल. सी. सै. स्कूल; दरीबा (राजसमन्द), विवेक बंसल; अलीगढ़, गुप्त दान; दिल्ली, गुप्त दान; उदयपुर, सुरेश पाल; यू. एस. ए., ओमप्रकाश अग्रवाल; नोएडा, आर्य समाज; गाँधीधाम (गुजरात), मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज; टाण्डा, आर्य समाज, हिरणमगरी; उदयपुर, डी.ए.वी. एकेडमी; टाण्डा, सुनीता आर्या; अजमेर, मनवानी ट्रस्ट; उदयपुर।

सम्पादक मण्डल

वेदमार्तण्ड डॉ. महावीर मीमांसक

आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय

वेदाचार्य डॉ. रघुवीर वेदालंकार

डॉ. सोमदेव शास्त्री

'सत्यार्थ सौरभ' एक प्रकार से अत्यन्त भाग्यशाली है कि उसको सजाने संवारने तथा पत्रिका की गरिमा में अभिवृद्धि के लिए आर्य जगत् के मूर्धन्य विद्वानों का सम्पादक मण्डल प्राप्त हुआ। समय–समय पर विचारों के माध्यम से, लेखों के माध्यम से जो कृपा सम्पादक मण्डल के विद्वानों ने हम पर की है, उसका शब्दों में वर्णन किया जाना शक्य नहीं है। वेदमार्तण्ड डॉ. महावीर मीमांसक, वेदाचार्य डॉ. रघुवीर वेदालंकार, आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय, डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री, डॉ. सोमदेव शास्त्री व आचार्य वेदप्रिय शास्त्री के प्रति हार्दिक आभार सहित उनसे यही प्रार्थना है कि अपना वरद हस्त व मार्गदर्शन सदैव प्रदान करते रहें।

डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री

आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

अशोक आर्य

सारस्वत अवदान

सत्यार्थ सौरभ को प्रकाशन के साथ ही एक ऐसी पत्रिका के रूप में प्रस्तुत करने का विचार था जिसमें एक ओर विद्वानों के पठन हेतु लेख हों वहाँ सामान्य पाठकों के लिए भी यथायोग्य सामग्री हो साथ ही हर आयु वर्ग के पाठकों के लिए जिसमें बच्चे भी शामिल हैं, सामग्री प्रत्येक अंक में हो। वेद और वैदिक सिद्धान्तों पर विमर्श के साथ सामयिक समस्याओं पर भी शोधपूर्ण व विश्लेषणपूर्ण सामग्री उपलब्ध हो।इस सारस्वत यात्रा में अगर उपरोक्त विद्वान् अपनी लेखनी से प्रसूत विचारोत्तेजक सारगर्भित तथा प्रमाण पुष्ट सामग्री बिना किसी शुल्क के हमें न भेजते तो भौतिक आवरण भले ही कितना भी सुन्दर होता, प्रशस्त वैचारिक सम्प्रेषण में पत्रिका अयोग्य ही सिद्ध होती। इसके लिए इन लेखक बन्धुओं व अन्य भी सभी ऐसे लेखक बन्धुओं, जिनकी संख्या पचास से कम नहीं है जिनका चित्र न होने के कारण यहाँ आने से रह गया है, के प्रति मैं अपनी ओर से तथा सत्यार्थ सौरभ के सम्पादक मंडल की ओर से हार्दिक आभार प्रकट करता हूँ और निवेदन करता हूँ कि अपना वैचारिक अवदान भविष्य में भी इसी प्रकार देते हुए सत्यार्थ सौरभ को विद्वद्जनों के बीच सम्मानित पत्रिका के रूप में स्थापित करने में सहयोग करते रहें।

– भवानीदास आर्य, प्रबन्ध सम्पादक

'सत्यार्थ सौरभ' - प्रसारक

श्रीमती शारदा गुप्ता
उदयपुर

श्री विजय शर्मा
भीलवाड़ा

सत्यार्थ सौरभ के शतकवीर

श्रीमती नीता गर्ग
उदयपुर

श्री राजवीर वैदिक
मुरादनगर

1. श्री भवानीदास आर्य; उदयपुर
2. श्री महेश सोनी; बीकानेर
3. श्री ओ.पी. वर्मा; जयपुर
4. श्री रामसिंह आर्य; भरतपुर
5. श्री राजकिशोर मोदी; झुमरी तलैया
6. श्री उदय नारायण गंगू; मॉरीशस
7. श्री राजकुमार जी – सरला जी गुप्ता; उदयपुर
8. श्री भँवरलाल जी आर्य; उदयपुर
9. श्री राजेन्द्र आर्य; कोटा
10. श्री वेदप्रिय जी शास्त्री; सीताबाड़ी
11. श्री आचार्य हरिप्रसाद जी; गाजियाबाद (वर्तमानः अमेरिका)
12. आचार्य वेद प्रकाश जी श्रोत्रिय; दिल्ली
13. डॉ. सोमदेव जी शास्त्री; मुम्बई
14. श्री पूर्ण सिंह; कानोड़
15. श्री प्रबोध चन्द्र सूद; काण्डाघाट (हि.प्र.)
16. श्री विनोद राठौड़; उदयपुर
17. श्री धर्मवीर बत्रा; पंचकूला
18. श्री अशोक कुमार आर्य; मानपुरा (गया)

किसी भी पत्रिका का प्रकाशन पाठकों के लिए ही किया जाता है। कितनी भी सुन्दर, सारगर्भित पत्रिका हो, अधिकाधिक पाठकों के हाथों में पहुँचने में ही उसकी उपयोगिता है। हमने अनुभव किया है कि आर्यसमाज के क्षेत्र में प्रायः पत्रिकाओं के प्रकाशक या सम्पादक जब आर्यसमाज के कार्यक्रमों में बाहर जाते हैं तब उनके आभा क्षेत्र में आने वाले सज्जन प्रायः पत्रिका के सदस्य बनते ही हैं, परन्तु हमारे साथ यह स्थिति नहीं है, हमारा बाहर जाना न के बराबर है। अतः और भी आवश्यक है कि 'सत्यार्थ सौरभ' के प्रशंसक स्वयमेव सदस्यता अभियान चलावें। संतोष है कि कुछ ऐसे कृपालु रहे हैं जिन्होंने 'सदस्यता शतक' को पूर्ण किया है। अनेक अज्ञात नाम भी ऐसे हैं जिन्होंने इस दिशा में पुरुषार्थ किया है, उन सभी साथियों का इस शतांक के अवसर पर धन्यवाद ज्ञापित करते हुए कुछ के नामों का उल्लेख अपना कर्तव्य समझ, यहाँ कर रहे हैं।

सत्यार्थ सौरभ के सभी पाठकों एवं सभी आर्यजनों से प्रार्थना है कि यदि वे पत्रिका को पसन्द करते हैं तो इस शतांक वर्ष में **कम से कम एक सदस्य अवश्य बनाने का उद्योग करने की कृपा करें।** आपका यह लघु उद्योग भी आपकी पत्रिका की सदस्य संख्या दुगुनी कर देगा।

विनीत : नारायण मित्तल, कोषाध्यक्ष-न्यास

व्यवस्था सहयोग

श्री भवानीदास आर्य

नवनीत आर्य

श्री सुरेश पाटौदी

श्री भँवर लाल गर्ग

श्री हंसराज चौधरी

श्री मुकेश चौधरी

श्री अरविन्द पंडित

श्री दिलीप पवार

श्री देवीलाल पारगी

श्री चन्द्रकान्त आर्य

श्री रमेश पालीवाल

श्री लक्ष्मण

श्री कालू

पत्रिका–प्रकाशन और वह भी मासिक कोई सरल कार्य नहीं है, यह पत्रिका–प्रकाशन से जुड़े सभी साथी जानते हैं। एक पूरा पृथक् कार्यालय इसके लिए आवश्यक होता है। पर यहाँ संसाधनों की कमी से सहयोगी–वृद्धि सम्भव नहीं थी। ऐसी दशा में अगर पत्रिका निकालनी है तो यही हो सकता था कि वर्तमान स्टॉफ ही इस अतिरिक्त कार्य को संपादित करे। यह तभी सम्भव है जब सहयोगीजन संस्था के उद्देश्यों के प्रति समर्पण की हद तक दीवानगी रखते हों। सौभाग्य से हमें ऐसे साथियों का साथ मिला। जहाँ चाह है, वहाँ राह है। न्यास के पुरोहित श्री नवनीत जो कम्प्यूटर का क,ख,घ भी नहीं जानते थे उन्होंने हमारे अनुरोध पर न सिर्फ कम्प्यूटर सीखा बल्कि उसमें दक्षता हासिल की और आज पत्रिका सम्बन्धी सभी कार्य उसकी साज–सज्जा वे देख रहे हैं तो दूसरी ओर न्यास के व्यवस्थापक के रूप में अनेक कार्यों का पहाड़ जैसा बोझ पहले से ही अपने कन्धों पर ढोने वाले श्री सुरेश पाटोदी जी, पत्रिका के प्रबन्ध सम्पादक श्री भवानी दास जी के नेतृत्व में, पत्रिका के सम्बन्ध में भी सम्पूर्ण व्यवस्थाओं को सम्भाल रहे हैं। वितरण, डाक सम्बन्धी सभी जिम्मेदारियों को निभाने में श्री देवी लाल, श्री लक्ष्मण तथा श्री कालूलाल आदि सहयोगी जुट गए। कार्यालय मंत्री के रूप में श्री भँवरलाल गर्ग अपनी भूमिका बखूबी निभा रहे हैं। वहीं श्री दिलीप जी तथा श्री रमेश जो पूर्व से ही हमारे साथी रहे हैं, ने आये हुए लेखों को टाइप करने की जिम्मेदारी उठा ली। दैवयोग देखिए, फोटोशॉप में निपुणता लिए हमारे पुराने साथी श्री चन्द्रकान्त आर्य हमसे जुड़ गए। श्री अरविन्द; जोधपुर जहाँ नियमादि के संदर्भ में मार्गदर्शन देते रहते हैं वहीं पत्रिका को प्रत्येक दृष्टि से दर्शनीय बनाने में चौधरी प्रिंटिंग के स्वामी श्री हंसराज जी और श्री मुकेश जी सम्बल बने हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि पत्रिका प्रारम्भ करने से पूर्व जो स्टाफ कार्यरत था बिना उसमें एक भी सदस्य की वृद्धि किये पत्रिका न केवल सौवें अंक तक यात्रा सम्पन्न कर पायी है वरन् हम संतोष के साथ अंकित कर रहे हैं कि एक भी अंक के प्रेषण में एक भी दिन का विलम्ब इस यात्रा में नहीं हुआ। स्पष्ट है कि इस चमत्कार में सभी साथियों का पुरुषार्थ है जो उन्होंने बिना किसी प्राप्ति की आशा के किया और अभी भी करने में जुटे हैं। अतः इस महनीय अवसर पर उनके पुरुषार्थ व संस्था से जुड़ाव की भावना को हम नमन करते हैं।

सत्यार्थ प्रकाश भवन (नवलखा महल) : एक परिचय

कभी यह महल महाराणा सज्जनसिंह, मेवाड़ के तत्कालीन शासक का मुख्य राजकीय अतिथिगृह था। इस सुन्दर तथा नयनाभिराम प्रासाद में ही महाराणा सज्जन सिंह जी ने महर्षि दयानन्द सरस्वती को ठहराया था। कालान्तर में उपेक्षित पड़े इस भवन का मुख्य द्वार जीर्ण-शीर्ण होकर बरसात में गिर गया। न्यास ने नवलखा महल की ही वास्तुशैली के अनुरूप मनोहारी छतरी सहित मुख्य द्वार का निर्माण कराया।

महर्षि जी की यात्राएँ

महर्षि दयानन्द ने मथुरा पहुँचने से पूर्व ज्ञानार्जन हेतु सच्चे गुरुवर्य की व योगियों की तलाश में व तत्पश्चात् गुरुवर विरजानन्द जी के चरणों में बैठकर वेदज्ञान की कुंजी प्राप्त कर, जन-जन को सत्य के आलोक से आलोकित कर उन्हें अज्ञानाधन्कार से छुड़ाने का व्रत लेकर नाना प्रकार के घोरतम कष्ट सहन करके भी अहर्निश यात्राएँ की थीं। यातायात के साधनों की अत्यल्पता के बावजूद भी हजारों किलोमीटर की ये यात्राएँ महर्षि के सत्य व मानवता के प्रति समर्पण की परिचायक हैं, जिन्हें मानचित्र के द्वारा प्रदर्शित किया गया है।

सत्यार्थ प्रकाश भवन का भीतरी प्रासाद

मुख्य द्वार की तरह अन्दर भी सभी जगह जीर्ण-शीर्ण हो जाने के कारण भवन की स्थिति दयनीय थी। न्यास ने लाखों रुपयों की लागत से उसका जीर्णोद्धार किया। आज यह सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल अपनी नई सजधज, सुन्दर लॉन के साथ पर्यटकों का मन मोह लेता है।

महर्षि की यात्राएँ

अतिथि विश्राम गृह

वैदिक साहित्य विक्रय केन्द्र

अतिथि विश्राम गृह

इस ऐतिहासिक व पावन स्थल के दर्शनार्थ सैंकड़ों आर्यजन विशिष्ठ अतिथिगण आते हैं। उनकी सुविधा के लिए कुछ वातानुकूलित कमरे व प्रसाधन निर्मित करवाए गए हैं।

वैदिक साहित्य विक्रय केन्द्र

नवलखा महल में प्रतिदिन पधारने वाले सैंकड़ों पर्यटकों को प्रेरणा मिल सके इस हेतु आर्ष साहित्य विक्रय केन्द्र की स्थापना की गई है जहाँ से जिज्ञासुजनों को वैदिक एवं आध्यात्मिक, राष्ट्रीय, सामाजिक व पारिवारिक जीवन को ऊर्ध्व दिशा में ले जाने वाला साहित्य व सुन्दर भजनों के वीसीडी/डीवीडी प्राप्त हो सकते हैं।

अन्दर का मुख्य चौक-संगीतमय फव्वारे

भवन के अन्दरूनी चौक में कभी साढ़े छह मास तक नित्य महर्षि दयानन्द जी की ओजस्वी वाणी व उससे निःसृत वेद सरणि प्रवाहित हुई थी, जिसमें महाराणा सज्जन सिंह जी व मेवाड़ के अन्य गणमान्य नागरिकों ने प्रतिदिन स्नान कर स्वयं को धन्य किया था। इसी स्मृति को अक्षुण्ण बनाने के लिए महर्षि महिमा के गीत यहाँ गूँजते रहें, इस भावना से आर्य संगीत फव्वारे जो कि ऋषि महिमा के गीतों की धुनों पर रंगीन आभा बिखेरते हुए थिरकते हैं, निर्मित कराए गए हैं। तीन ओर की दीवारों पर महाराणा सज्जन सिंह जी व अन्य स्वतंत्रता के वीर पुजारियों व महापुरुषों के चित्र दर्शाए गए हैं, जो रात्रि में विशेष विद्युत व्यवस्था में मन को मोह लेते हैं।

यज्ञशाला वैदिक संस्कृति में यज्ञ व यज्ञशाला का केन्द्रीय स्थान है। लता गुल्मों से घिरी इस मनोहारी यज्ञशाला व यज्ञवेदी का निर्माण आर्य विद्वानों की देखरेख में पूर्ण विधि विधान के अनुसार किया गया है। यज्ञशाला के प्रांगण में ५०० व्यक्ति बैठ सकते हैं। चारों तरफ यज्ञ महिमा पर वेद मंत्र व इनके अर्थ अंकित हैं। यहाँ प्रातः सायं अग्निहोत्र व वर्ष में विशेष अवसरों पर विशेष यज्ञों व वेदकथा का आयोजन किया जाता है।

साधना कुटीर

सर्वविदित है कि महर्षि की स्मृति में नलवखा महल को

अन्तर्राष्ट्रीय स्तर का स्मारक बनाने व वैदिक विचारधारा को दिग्दिगन्त में प्रसारित करने का संकल्प ले न्यास अध्यक्ष श्री हनुमान प्रसाद चौधरी ने अपना कार्य व्यापार बन्द कर, सम्पूर्ण समय न्यास को देने हेतु संन्यासाश्रम में प्रवेश कर अपना रिहायशी बंगला भी बेच दिया। वह सर्वमेध यज्ञकर्त्ता तत्वबोध सरस्वती के रूप में इसी नवलखा महल में साधना कुटीर बनाकर अपने संकल्प की पूर्ति हेतु साधनारत् रहे तथा २३ जुलाई २००४ को इस नश्वर संसार से विदा हो गए।

आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा

नवलखा महल के दर्शनार्थ अब सहस्रों दर्शकों के साथ- साथ छात्र-छात्राएँ भी पर्याप्त संख्या में आने लगे हैं। इसी स्थल पर एक भव्य 'आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा' को विकसित किया गया है। मानव सृष्टि के आरम्भ से अब तक

उत्पन्न महान् ऋषियों, महापुरुषों के एवं महर्षि दयानन्द के जन्म से निर्वाण तक की प्रमुख घटनाओं को दिग्दर्शित करते आकर्षक तैलीय चित्र हिन्दी व अंग्रेजी में इनके विवरण के साथ दर्शाये गए हैं।

चित्रदीर्घा में ही घूमती हुई रेक पर २४ भाषाओं में उपलब्ध सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ को प्रदर्शित किया गया है।

सम्पूर्ण विश्व में सत्य के अर्थ का प्रकाश करने वाले सत्यार्थप्रकाश ग्रन्थ को जहाँ सम्पूर्ण किया गया, उस पावन कक्ष के महत्व को चिरस्मरणीय बनाने हेतु एक चौदह खण्डीय, सेन्सर से घूमता हुआ काँच का सत्यार्थ प्रकाश स्तम्भ स्थापित किया गया है, जिस पर सत्यार्थ प्रकाश की मुख्य शिक्षाओं का अंकन किया गया है।

वैदिक पुस्तकालय व वाचनालय

भवन के प्रथम तल पर कैप्टन देवरत्न आर्य पुस्तकालय स्थापित किया गया है। इसमें लगभग सोलह हजार से अधिक पुस्तकें संग्रहीत हैं जो स्वाध्याय के अतिरिक्त वैदिक शोधकर्ताओं हेतु अत्यन्त उपयोगी हैं। यहाँ वैदिक जगत् की प्रमुख पत्रिकाएँ भी वाचनालय में अध्ययन हेतु रखी गई हैं।

सत्यार्थ सौरभ- न्यास द्वारा सत्यार्थप्रकाश की शिक्षाओं पर आधारित बहुप्रशंसित मासिक पत्रिका 'सत्यार्थ सौरभ' प्रकाशित की जाती है जिसमें पूरे परिवार के सभी आयु वर्ग के सदस्यों हेतु उपयोगी सामग्री प्रकाशित होती है यह www.satyarthprakashnyas.org पर भी देश-विदेश में पढ़ी जाती है।

माता लीलावन्ती सभागार

न्यास के पृष्ठ भाग में वातानुकूलित भव्य 'माता लीलावन्ती सभागार' निर्मित किया गया है। इसमें दृश्य श्रव्य माध्यम से ऋषि जीवनी दर्शकों को दिखायी जाती है। इस सभागार में मासिक सत्संग, वैदिक कार्यशालाएँ, विचार गोष्ठियाँ, संस्कार शिविर एवं अन्य विभिन्न आयोजन होते रहते हैं। इसके समीप ही एक अन्य अतिथि कक्ष भी निर्मित किया गया है।

आर्यावर्त चित्रदीर्घा

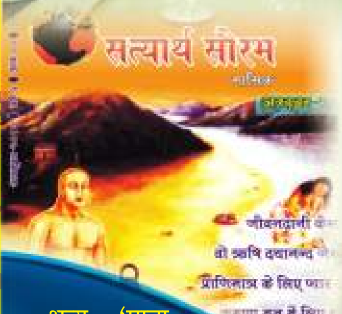

सत्यार्थप्रकाश स्तम्भ

माता लीलावन्ती सभागार

श्रीमती ब्रजलता मल्टीमीडिया सेण्टर

महापुरुषों के जीवन पर आधारित लघु फिल्में/वृतचित्र पिक्चर हॉल जैसे अनुभव के साथ दिखायी जाती हैं ताकि उदात्त शिक्षाओं को आज का युवावर्ग अपने जीवन में स्थान देवे। इसी उद्देश्य से उक्त प्रकल्प की स्थापना की गई है, जो अत्यन्त सफलतापूर्वक आगन्तुकों को प्रेरणा दे रहा है।

☆☆☆

नवीन प्रकल्प

संस्कार वीथिका एवं 3डी थियेटर

नवलखा महल, उदयपुर में, विश्व प्रसिद्ध आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा पहले से ही सहस्रों जनों को प्रतिवर्ष आकर्षित कर रही है। इसी को विस्तार देने हेतु एक 3डी थियेटर (सर्वोत्कृष्ट क्वालिटी में) तैयार किया जा रहा है। जिसमें छात्रोपयोगी लघु फिल्में दिखायी जाएँगी। संस्कार वीथिका के बारे में हमारा निवेदन है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती ने भारतीय मनीषा को पुनर्जीवित करते हुए 'मानव तू मानव बन' को साकार

करने हेतु 16 संस्कारों से युक्त 'मानव निर्माण पद्धति' हमें 'संस्कार विधि' के रूप में प्रदान की है। परन्तु इसका प्रचार अत्यल्प ही हुआ है। आर्यों के परिवार भी 2–3 संस्कारों तक सीमित रह गए हैं। सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्रसव पूर्व के तीनों संस्कार तो जैसे अज्ञात हो गए हैं। न्यास परिसर में आने वाले सहस्रों युवाओं तक यह 'विस्मृत–मानव–निर्माण–विधि' पहुँचे इस उद्देश्य से अत्यन्त आकर्षक रूप में दृश्य–श्रव्य माध्यम से 4डी संस्कार वीथिका–निर्माण कार्य प्रारम्भ किया है। इसका स्वरूप यद्यपि 2डी में नहीं समझा जा सकता फिर भी समझाने हेतु निम्न प्रयास कर रहे हैं।

भीतरी चौक की साज–सज्जा अत्यन्त मनोरम बनाई जा रही है। प्रत्येक संस्कार जीवन्त झाँकी के रूप में दर्शित होगा। उदाहरण हेतु :– अगले पृष्ठ पर एक ओर एक चित्र दे रहे हैं जिसमें गर्भाधान संस्कार हेतु कल्पित चित्र दर्शाया है। अपने शयन कक्ष में पति–पत्नी

विशेष निवेदन

एक संस्कार के निर्माण में अनुमानतः 5 लाख रुपये का व्यय आएगा। जो बन्धु मात्र **3 लाख** रुपये इस अदभुत् एवं पवित्र योजना के लिए प्रदान करेंगे, वह संस्कार उनके नाम से प्रायोजित किया जाएगा। केवल 16 उदारमना आर्य मिलकर इस चमत्कार को सम्भव बना सकते हैं। यह आपका महनीय योगदान होगा।

वार्तालाप कर रहे हैं। एक चित्र हम उन मूर्तियों का दे रहे हैं जो विषय से सम्बन्धित तो नहीं हैं पर आर्य बन्धुओं को यह आभास दे सकेंगे कि इसी स्तर के (Life size) जीवन्त शिल्प में सारे 16 संस्कार दिखाये जायेंगे।

प्रकाश तथा ध्वनि का संयोजन इस प्रकार किया जायेगा कि जब एक संस्कार पर प्रकाश पड़ेगा और तभी लगभग डेढ़ मिनट का वक्तव्य उस संस्कार के महत्व को निरूपित करता हुआ नेपथ्य से उभरेगा। इस प्रकार यह अद्‌भुत 'संस्कार वीथिका दिग्दर्शन' लगभग 20–22 मिनट में पूर्ण होगा।

परन्तु इस अद्‌भुत परियोजना का सम्पूर्णन आर्य जगत् के अर्थ सहयोग के बिना संभव नहीं है। न्यास के

संकल्प की पूर्ति हेतु उदार आशीर्वाद की अपेक्षा है।

पहली बार हम आर्यजनों से इस महत्वाकांक्षी योजना को साकार करने के लिए 'अर्थ सहयोग' की अपील कर रहे हैं। योजना अत्यधिक व्यय साध्य है। कुल मिलाकर 16 संस्कार होंगे। एक संस्कार पर अनुमानित औसतन 5 लाख रु. का खर्च आवेगा। अतः 16 ऐसे दानवीर जो एक एक संस्कार प्रायोजित कर सकें तो चुटकी बजाते ही वीथिका पूर्ण हो जाएगी। पर इस पवित्र कार्य में 'अल्पदानी' भी भागीदार बन सकें इस हेतु निवेदन है कि जो 5 के बजाय 3 लाख रु भी देंगे, एक संस्कार उनकी ओर से प्रयोजित हो जायेगा। 51 सहस्र के 6 दानियों के सम्मिलित नाम से एक संस्कार प्रयोजित हो सकेगा। अतः आप स्वेच्छा से उक्त राशि प्रदान कर महर्षि जी की कार्यस्थली पर निर्मित होने वाली इस 'संस्कार वीथिका' पर अपना नाम अंकित कर पुण्यभागी बनें और सहस्रों लोगों तक अभिनव प्रकार से वैदिक सन्देश पहुँचाने में साधक बनें।

निवेदक
श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग
उदयपुर

विशेष निवेदन

जन-जन के नैतिक उत्थान के अभिलाषी बन्धु इस वरणीय योजना में मात्र **51000 रुपये** देकर भी सहयोगी बन सकते हैं। ऐसे छः दानदाताओं के नाम से एक संस्कार प्रायोजित किया जा सकता है। एक शहर के आर्य बन्धु मिलकर तीन लाख रुपये का सात्विक दान देंगे तो उस शहर के नाम से एक संस्कार प्रायोजित होगा। अदभुत् योजना है पर आपकी उदारता से ही सम्भव है।

नई सजधज के साथ नवलखा महल

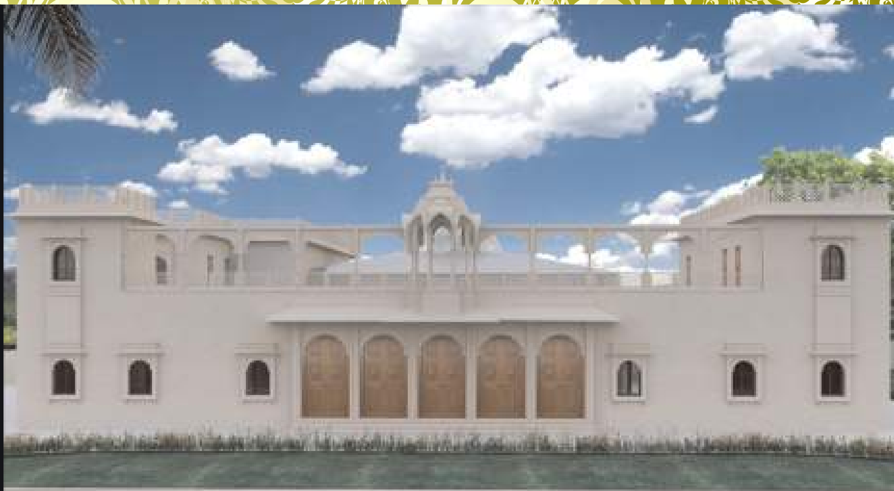

सुरेशचन्द्र दीनदयाल आर्य चल चित्रालय

नवीन प्रकल्प के दान दाता

₹15 लाख

₹15 लाख

₹5 लाख

₹1 लाख

शतहस्त
समाहर
सहस्रहस्त
सं किर

₹1 लाख

₹3 लाख

प्रतिवर्ष, न्यूनतम 1 लाख जनों तक
अद्भुत वैदिक जीवन प्रणाली-सार पहुँचाने
के इसी उपक्रम से आप भी अवश्य जुड़े।

संकल्पक

श्री राम प्रसाद याज्ञिक, कोटा – ₹5100
सभी आर्य समाजें, कोटा शहर – ₹3 लाख
आर्य समाज, भीलवाड़ा – ₹3 लाख

॥ओ३म्॥

शुभकामनाएँ

यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि 'सत्यार्थ सौरभ' मासिक पत्रिका का 100 वाँ अंक प्रकाशित होने जा रहा है। मुझे यह लिखने में कोई भी अतिश्योक्ति प्रतीत नहीं हो रही कि यह पत्रिका वर्तमान में आर्य जगत् की सर्वोत्तम आध्यात्मिक पत्रिका है। प्रथम अंक से ही इसका मुद्रण, इसकी साज–सज्जा, इसकी विषय वस्तु अत्यन्त आकर्षक, मनमोहक एवं उच्च कोटि की रही है। प्रत्येक अंक के मुख पृष्ठ पर ऋषिवर देव दयानन्द की महिमा का और उनके उपदेशों का काव्यात्मक शैली में अनूठा प्रस्तुतीकरण हृदय को छू जाता है। इसी प्रकार प्रत्येक अंक के अन्तिम कवर पृष्ठ पर ऋषिवर के सत्यार्थ प्रकाश में लिखे अमृत वचनों का सचित्र उल्लेख मन–मस्तिष्क को रोमांचित कर देता है। पत्रिका के प्रत्येक अंक के अन्दर की विषय वस्तु का चयन, सम्पादक श्री अशोक आर्य की विलक्षण प्रतिभा और उनकी स्वस्थ एवं जागृत मानसिकता का प्रतीक है। माइंड लिंचिंग जैसे महत्वपूर्ण विषय पर पिछले चार अंकों से लगातार प्रकशित हो रहे उनके विचारों को पढकर लगता है कि भारत के स्वर्णिम अतीत को, गौरवशाली इतिहास को और अमूल्य वैदिक संस्कृति को विस्मृत करती जा रही उसकी उपेक्षा करती जा रही वर्तमान पीढ़ी का भविष्य कैसा होगा।

सत्यार्थ सौरभ का प्रत्येक अंक वेद सुधा, वैदिक ज्ञान विज्ञान, महापुरुषों की जीवन गाथा, ऋषिवर दयानन्द, आर्य समाज और आर्य जगत् के अनेक प्रासंगिक विषयों पर सकारात्मक विचारों से ओतप्रोत रहता है। निश्चित रूप से इस पत्रिका की बहुपक्षीय उच्चतम गुणवत्ता का सम्पूर्ण श्रेय श्री अशोक जी आर्य और उनकी टीम के अथक परिश्रम को जाता है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका निरन्तर नये–नये कलेवर के साथ पाठकों का मन मोहती रहेगी।

100वें अंक के प्रकाशन के शुभ अवसर पर मैं अपनी हार्दिक मंगलमयी शुभकामनाएँ प्रेषित करते हुए अत्यन्त उल्लास और उत्साह का अनुभव कर रहा हूँ।

- सुरेशचन्द्र आर्य
प्रधान- सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली
प्रधान- गुजरात प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा
न्यासी- श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास

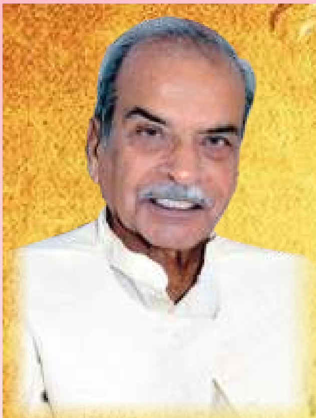

॥ओ३म्॥

प्रिय अशोक आर्य जी,
सादर सप्रेम नमस्ते।

आपके द्वारा प्रेषित पत्रांक 194 दिनांक 6 फरवरी 2020 द्वारा यह उत्साह और उल्लासवर्द्धक समाचार प्राप्त हुआ कि सत्यार्थ सौरभ के 99 अंक सफलतापूर्वक प्रकाशित हो चुके हैं तथा 100वां अंक माह अप्रैल 2020 में प्रकाशित होने जा रहा है।

सत्यार्थ प्रकाश न्यास के गठन तथा 'सत्यार्थ–सौरभ' पत्रिका के प्रकाशन के प्रारम्भ से ही मैं इस अभियान का प्रशंसक रहा हूँ तथा समय–समय पर अपने सुझावों से आपको अवगत कराता रहा हूँ।

सत्यार्थ सौरभ का प्रकाशन हिन्दी तथा आर्य पत्रकारिता का एक ऐसा समुज्ज्वल पक्ष है जो वर्तमान पीढ़ी को तो प्रभावित कर ही रहा है; भावी पीढ़ी को भी सन्मार्ग पर चलने की प्रेरणा देने के लिए अपने पग–चिह्न छोड़ता जा रहा है। 'सत्यार्थ सौरभ' पत्रिका ने अपनी नवीन भावबोध, अर्थबोध तथा मौलिक भावनाओं से आर्य पत्रकारिता को गौरवान्वित किया है, नूतन दिशा प्रदान की है। घिसे पिटे मार्ग और बंधी बधाई लीक पर न चलकर सत्यार्थ सौरभ ने अभिनव मार्ग का अन्वेषण किया तथा सुविचारित विवेकपूर्ण ढंग से उस मार्ग पर चलकर दिखाया।

तेजी से बदलते हुए आधुनिक युग के स्पन्दनों को पहचान कर उनमें नवजीवन और नवप्रेरणा के अंकुरों को प्रस्फुटित करने के उपयुक्त वातावरण का समावेश करते हुए सत्यार्थ सौरभ ने यह कार्य कर दिखाया है, जो अब तक किसी अन्य पत्र के द्वारा संभव नहीं हुआ। इसका सबसे बड़ा प्रमाण यही है कि सत्यार्थ सौरभ आर्य समाज और सत्यार्थ प्रकाश के प्रेमियों, श्रद्धालुओं के अलावा भी बड़ी संख्या में जन सामान्य नर, नारियों, बालकों, युवा–वृद्धों सभी को अपनी ओर आकृष्ट करने में सफल रहा है और सफलता का यह ग्राफ बड़ी तेजी से बढ़ता जा रहा है।

भाषा की जीवन्तता, विचारों की प्रखरता, स्तम्भों की नवीनता– 'क्षणे क्षणे यन्नतामुपैति तदैव रूपं रमणीयतायाः' की उक्ति को चरितार्थ करती है। आपने महर्षि दयानन्द की विचारधारा को व्यापक परिपेक्ष्य में समझने और ग्रहण करने योग्य परिवेश की संरचना करके स्तुत्य कार्य किया है। निश्चय ही किसी पत्र का विकास उसके सम्पादक की योग्यता, आत्मविश्वास और व्यावहारिकता पर निर्भर होता है। आपने सत्यार्थ–सौरभ के माध्यम से हिन्दी पत्रकारिता को एक बार पुनः पूर्व कालखण्डों में प्रकाशित सरस्वती, धर्मयुग, साप्ताहिक हिन्दुस्तान, दिनमान जैसे बड़े पत्रों की पंक्ति में लाकर खड़ा किया है।

मेरी सर्वात्मना शुभकामनाएँ आपके साथ हैं। आशा है 'सत्यार्थ सौरभ' पत्रिका अनेक शतकों की यात्रा पूर्ण करते हुए महर्षि दयानन्द के जीवनादर्शों और विचारों को व्यापक आधार प्रदान करने में सफलता का वरण करेगी।

–शुभेच्छु

आनन्द कुमार आर्य,
प्रबन्धक, मिश्रीलाल आर्य कन्या इन्टर कॉलेज, टाण्डा, उत्तर प्रदेश,
प्रधान आर्य समाज, टाण्डा, उत्तरप्रदेश

।।ओ३म्।।

सत्यार्थ-सौरभ की शतांक पर्य्यन्त यात्रा

जो ब्रह्म अनन्त, अनादि, विश्वकृत, अज, सत्य तथा शाश्वतादि विशेषणों से युक्त है। जिसकी विद्या निगमगृद, वैधर्म्य विश्वंसिनी तथा सनातनी है, जो संसार के मनुष्यों के लिए सौभाग्यप्रद है, उस ब्रह्म के साक्षाद्द्रष्टा महर्षि दयानन्द ने ब्रह्मा से जैमिनी मुनि पर्य्यन्त आर्यमुनि ऋषियों की जो सनातन व्याख्यान रीति है, उसको समाश्रित कर वेद विदूषक दोषों से पृथक् वेद विभूषण गुणों से युक्त ईश्वरानुग्रह से सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ की रचना की। इस सिद्धान्त भास्कर सत्यार्थ प्रकाश की आकांक्षा, योग्यता, आसक्ति तथा तात्पर्य से युक्त वाक्य–बोधार्थ प्रकाशिका भाषा भावादि को कुछ अल्पबुद्धि लोग ऋषिज्ञान में दोष दिखाने की भावना से दूषित करने का प्रयास कर रहे थे, तब सत्य–सत्य अर्थों के प्रकाशन के मुख्य प्रयोजन के विचार को गर्भ में रखकर 'सत्यार्थ –सौरभ' का जन्म हुआ। हमारा मानना है कि जिस प्रकार सितारों का गिनना असंभव है, जूही के फूल से शैल का विदारण असम्भव है और सविता को पकड़कर भूमि पर डालना असंभव है, उसी प्रकार सत्यार्थ प्रकाश की भाषा वा सिद्धान्त में दोष देखना भी असंभव है।

एतद्भावगर्भित यह पत्रिका अपने जन्म से अद्यपर्यन्त अर्थात् शत अंक पर्यन्त उत्थान क्रम में अपने पथ पर दृढ़ता से अग्रसर है। पत्रिका प्रगल्भ पाण्डित्यप्रधान विद्वानों के लेखों को जहाँ अपने अंक में संजोकर रखती है, वहीं भावगर्भित लेखों को उभारने के लिए चित्तविमोहक चित्रों का स्वारस्य सम्पादक की बुद्धि कौशल का स्तुत्य परिचय देता है जिसके विषय में शब्द–वर्णन अशक्य है अर्थात् कुछ कहते ही नहीं बनता। आवरण–पृष्ठ पत्रिका के महनीय उदात्त रूप का उद्घोषक है जो वरवश अपनी ओर सहसा आकृष्ट कर अपने भीतर लेख सामग्री की ओर ले जाने को बाध्य करता है। विद्वानों की हस्तगृहीत नई तूलिका से बने या उत्पन्न भाव चित्रों में रंग भरकर उनको उभारने तथा नये राग को नूतन स्वर दे वा भाषा को नूतन अक्षर देने में सम्पादक की कुशलता प्रति अंक अभिनव है। नये युग की इस पत्रिका की नई कीर्ति रचना में समर्पित ऊहा के यशस्वी स्वामी आर्य परम्परा पोषक, आर्य कुलभूषण सत्यार्थ प्रकाश न्यास के कार्यकारी अध्यक्ष श्री अशोक जी आर्य की मौलिक भावना स्तुत्य है। पत्रिका निश्चित अपना यशोगान करते हुए असीमित काल तक ऐसे ही सत्यार्थ–सौरभ बनी रहे। यही कामना है।

– वेदप्रकाश श्रोत्रिय
२४३, अरावली अपार्टमेन्ट
प्रथम तल, अलकनन्दा, दिल्ली

।।ओ३म्।।

अभिशंसा

प्रचेतसे प्र सुमतिं कृणुध्वम्।

ऋग्वेद ७/३१/१०

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, उदयपुर आर्य जगत् व विश्व का विशिष्ट स्थान है एवं स्वामी महर्षि दयानन्द सरस्वती की दिव्यवाणी सत्यार्थ प्रकाश का मूल व जन्मस्थान है।इस न्यास परिसर का एक महत्वपूर्ण वैशिष्ट्य यह भी है कि इस न्यास से 'सत्यार्थ–सौरभ' नामिका मासिक पत्रिका का गत 8 वर्षों से निरन्तर प्रकाशन हो रहा है। 9वें वर्ष में प्रवेश है, जिसके अप्रैल मास 2020 में 100 अंक पूर्ण हो रहे हैं।अब तक 99 अंक अति उत्तमता से प्रकाशित हुए हैं।

आर्य जगत् के वेद, ईश्वर, दयानन्द, आर्य समाज, गुरुकुल, समाजोत्थान, देशोन्नति, स्त्री शिक्षा आदि अनेक परिक्षेत्र हैं, जिनकी गतिविधियों का परिज्ञान, सूचना पत्र–पत्रिकाओं से होती है, उनमें 'सत्यार्थ–सौरभ' पत्रिका का भी महत्वपूर्ण योगदान है।

'सत्यार्थ–सौरभ' पत्रिका ने अपनी इस शतीय अंक की यात्रा में ईश्वर, वेद, दयानन्द आदि के सिद्धान्तों के ज्ञापन में अप्रतिहत गति से भूमिका निभाई है।इस पत्रिका की अनेक विशेषताएँ हैं।प्रति अंक में नूतन–नूतन बिन्दुओं पर विचार प्रकाशित होते रहे हैं।ज्ञान, विज्ञान, अध्यात्म, स्वास्थ्य आदि विषयों का गद्य–पद्य विधाओं से ज्ञापन हुआ है।

इस पत्रिका की सबसे बड़ी यह भी विशेषता है कि प्रत्येक प्रकार के ज्ञान–विज्ञान को सचित्र प्रस्तुत किया गया है। यह आर्य जगत् की पहली पत्रिका है, जिसने पाठ्य के साथ–साथ दृश्य विधा से भी विषयों का परिज्ञान कराया है।

पत्रिका के अनेक सम्पादक हैं,उनके कई विभाग हैं। मैं सत्यार्थ सौरभ पत्रिका के सभी सम्पादकों एवं प्रधान सम्पादक मान्य भाई श्री अशोक जी आर्य को बहुत–बहुत बधाई देती हूँ जिनके सम्पादकत्व में पत्रिका ने उच्च स्थान प्राप्त किया है। अशोक जी की इस विधा का भी मान करती हूँ कि उन्होंने महर्षि दयानन्द सरस्वती के विचारों को जन–जन तक पहुँचाने के लिए 'सत्यार्थ प्रकाश पहेली स्तम्भ' को भी पत्रिका में स्थान दिया, और भाग लेने वालों को पुरस्कृत भी किया है।

'सत्यार्थ–सौरभ' पत्रिका निरन्तर अबाधित रूप से प्रकाशित होती रहे, एतदर्थ पुनः सम्पूर्ण सम्पादक मण्डल एवं प्रकाशक न्यास को साधुवाद, धन्यवाद देती हूँ।

– आचार्या डॉ. सूर्यादेवी चतुर्वेदा

प्राचार्या पाणिनी कन्या महाविद्यालय,

वाराणसी– १०

।।ओ३म्।।

सत्यार्थ सौरभ वैशिष्ट्य

अमरहुतात्मा पंडित लेखराम ने अंतिम समय में इच्छा प्रकट करते हुए कहा था कि आर्य समाज से तहरीर और तकरीर का कार्य बंद न होने पावे अर्थात् लेखनी और वाणी से वैदिक धर्म के प्रचार का कार्य बंद न हो अर्थात् चलता रहे। अपने सिद्धान्तों के प्रचार प्रसार के ये दो (लेखनी और वाणी) ही माध्यम हैं और इन दोनों माध्यमों में कुछ ही भद्रजन सफल होते हैं। प्रायः देखा गया है कि जो लिखने में (लेखक के रूप में) सिद्धहस्त होता है वह उतना प्रखर वक्ता नहीं होता और जो प्रखर वक्ता (वाणी का धनी) होता है वह कुशल लेखक नहीं होता है। ये दोनों गुण 'तपोभूमि' मासिक पत्रिका के सम्पादक श्री ईश्वरी प्रसाद जी 'प्रेम' (महात्मा प्रेमभिक्षु जी) में थे, जो लेखनी और वाणी के धनी थे।

सत्यार्थ प्रकाश न्यास, उदयपुर के कार्यकारी अध्यक्ष एवं 'सत्यार्थ सौरभ' मासिक पत्रिका के सम्पादक श्री अशोक आर्य में ये दोनों गुण, लेखन और वाणी के पैतृक सम्पदा के रूप में इन्हें माननीय प्रेमभिक्षु जी से प्राप्त हुए हैं। इनके अतिरिक्त कुशल संयोजन, पत्रिका की साज सज्जा, पत्रिका में अनावश्यक सामग्री का न होना, समयानुकूल और पाठकों के लिए उनकी इच्छा और आवश्यकता के अनुरूप लेख होना, ये अपने आप में बहुत महत्वपूर्ण है । ये सब 'सत्यार्थ सौरभ' पत्रिका में देखने को मिलते हैं। यह पत्रिका कहीं समाचार–पत्रिका न बन जाये इसका भी विशेष ध्यान इसमें रखा जाता है जिसमें आवश्यक और (महत्वपूर्ण समाचार) संक्षेप रूप में पाठकों की जानकारी के लिए दिए जाते हैं न कि किसी की महिमा–मंडित करने के लिए।

इन्हीं सभी विशेषताओं के कारण बहुत कम समय में यह पत्रिका बहुत लोकप्रिय देश विदेश में हो गई है। भारी भरकम महंगाई के युग में भी पत्रिका का शुल्क नाममात्र का ही थोड़ा रखा गया है जिससे जनसामान्य भी इसका लाभ उठा सकें।

सत्यार्थ सौरभ पत्रिका के माध्यम से वैदिक विचारों के प्रचार प्रसार में अहर्निश श्री अशोक जी (सम्पादक के रूप में) अथक परिश्रम कर रहे हैं। वे बधाई के पात्र हैं। इसके प्रबन्ध सम्पादक श्री भवानीदास जी आर्य, प्रबन्धक सहयोगी श्री नवनीत आर्य तथा व्यवस्थापक श्री सुरेश जी पाटौदी जैसे महानुभाव सभी धन्यवाद एवं बधाई के पात्र हैं।

डॉ. सोमदेव जी शास्त्री
डी–३०९, मिल्टन अपार्टमेन्टस,
जुहू कोलीवाड़ा,
मुम्बई– ४०००४९

।।ओ३म्।।

अप्रैल 2020 में 'सत्यार्थ सौरभ' का 100 वां अंक प्रकाशित किया जा रहा है। 100 की संख्या पूर्ण संख्या है। इसके बाद पुनः 1 से ही गिनती शुरू होती है। लगता है कि 'सत्यार्थ सौरभ' भी अपने पूर्णत्व को प्राप्त करता जा रहा है, किन्तु ऐसा नहीं है। अभी तो 100 महीनों की लघु अवधि का स्पर्श ही यह करेगा। इसकी पूर्णता तो 100 वर्षों की अवधि में होगी,तब भी प्रगति में कोई व्यवधान–विराम नहीं लगेगा। इसीलिए हम इसके 'भूयश्च शरद् शतात्' की मंगल कामना करते हैं। अब से 100 वर्षों बाद हम सब तो नहीं रहेंगे, किन्तु तब भी यह पत्र अपने सत्य–अर्थ–सौरभ से सबको सुवासित करेगा, ऐसा विश्वास है। उस सुवास का आनन्द लेने के लिए 'उत्पत्स्यन्तेऽन्येऽस्मत्समान् धर्माणः।'

100 महीनों में केवल आठ वर्ष ही पूर्ण होते हैं यह अभी इस पत्र का शैशव काल है। किन्तु स्वल्प अवधि में भी यह शिशु कितनों की आंख का तारा बना। कितनों के हृदय का हार बना, इसका अनुमान पत्र की ग्राहक संख्या तथा पत्र में निहित सामग्री से सहज रूप में ही लगाया जा सकता है।

न्यास द्वारा प्रकाशित सत्यार्थ प्रकाश के मानक संस्करण के प्रकाशनावसर पर इस पत्र को जन्म देने का विचार मन में उठा था। ग्राहक तथा धनादि विषयक शंकाएं भी थीं किन्तु वे शंकाएं हृदयाकाश से उसी प्रकार तिरोहित हो गई थीं जैसेकि वायु के झोंके से आकाश में विचरण करने वाले मेघ।

न्यास के कार्यकारी अध्यक्ष श्री अशोक जी ने संकल्प लिया, सहयोगियों का सहयोग लिया, विद्वान् सम्पादकों का सान्निध्य प्राप्त किया तो फिर क्या था ? पत्र जन्मा, चला, भागा तथा अब अच्छी दौड़ लगा रहा है। सत्य ही कहा है– 'साहसे श्रीः वसति।' इसकी सफलता के पीछे मुख्य प्रयास तो अशोक जी का ही है। उनके सहयोगी भी धन्यवार्दाह हैं तथा विद्वान् सम्पादक प्रणम्य हैं। मुझे छोड़कर सभी सम्पादकों ने किसी न किसी रूप में इसमें सहयोग दिया तथा दे रहे हैं।

(–डॉ. रघुवीर जी का भरपूर आशीर्वाद हमें प्राप्त हुआ है।–अशोक आर्य)

अशोक जी एक कर्मठ निष्ठावान कार्यकर्त्ता होने के साथ साथ अच्छे सम्पादक तथा लेखक भी हैं। अन्धविश्वास आदि के विरुद्ध उनके अच्छे लेख इसमें प्रकाशित होते रहते हैं। पत्र का कलेवर तथा निहित सामग्री सभी श्लाघनीय रहते हैं। किन्तु मुझे एक प्रान्तीय सभा के वरिष्ठ–गरिष्ठ अधिकारी ने यह भी कहा था कि अशोक जी पता नहीं पूरे पत्र में चिड़िया सी क्यों बैठा देते हैं ?

निरन्तर

यह ठीक है कि चित्रों के माध्यम से प्रभाव अच्छा पड़ता है, किन्तु चित्रों का संसार बालकों तक ही रोचक रहता है।प्रबुद्ध पाठक को तो अच्छे विचार ही आकृष्ट करते हैं , चित्र नहीं।इससे पत्र में स्थान भी कम हो जाता है।

आर्य समाज के अन्य भी कई पत्र पत्रिकाएं निकल रहे हैं उन पर टिप्पणी का मुझे अधिकार तो नहीं, पुनरपि इतना तो सुस्पष्ट है कि इनमें से कई तो श्वांस मात्र ले रहे हैं। कुछ का तो कलेवर तथा पठनीय सामग्री भी सकुंचित दायरे में ही दिखलायी देते हैं। यहां तक कि कई पत्र तो उनके सम्पादकों के चित्रों तथा कार्यक्रमों से ही भरे रहते हैं। ऐसा पत्र कभी भी राष्ट्रीय स्वरूप धारण नहीं कर सकता। यह संतोषप्रद ही है कि 'सत्यार्थ सौरभ' में अशोक जी का चित्र कभी कभी (एक प्रतिशत) ही दिखलायी देता है। सम्पादक की कुशलता पत्र के सम्पादन तथा उसमें निहित सामग्री पर निर्भर करती है। 'सत्यार्थ सौरभ' में अच्छी सामग्री रहती है, किन्तु अन्य पत्रों की भांति एक न्यूनता की ओर मैं संकेत करना चाहता हूं। वह यह कि हमारे किसी भी पत्र में समाज और राष्ट्र से जुड़े तात्कालिक महत्वपूर्ण मुद्दों पर ही कुछ नहीं कहा जाता। यथा तीन तलाक, शबरीमाला, समान नागरिक संहिता, हिन्दुओं की अल्पसंख्यता, धारा 370, बाबरी मस्जिद, राम मंदिर, पाकिस्तान में हिन्दुओं पर अत्याचार, जेएनयू की देश विरोधी घटनाएं, नारे तथा वर्तमान में सीएए आदि पर्याप्त मामले ऐसे हैं जिन पर लेखकों को विशेषकर सम्पादक को जमकर लिखना चाहिए तभी हमारे पत्र आर्य समाज मात्र की सीमा से बाहर निकलकर राष्ट्रीय स्वरूप धारण करेंगे। गुरुकुल कांगड़ी की वैदिक मैगजीन तो अन्तर्राष्ट्रिय पत्रिका थी। कम से कम हमें पांचजन्य जैसा पत्र तो निकालना ही चाहिए। 'सत्यार्थ सौरभ' इस दिशा में आगे बढ़े तो इससे उसकी लोकप्रियता के साथ ग्राहक संख्या भी बढ़ेगी। पत्र–पत्रिकाओं में यह दोष भी आ जाता है कि किसी के साथ वैचारिक वैमनस्य होने पर उसके लेख भी छापने बन्द कर दिए जाते हैं। यहां तक कि कुछ संस्थाएं तो ऐसे व्यक्तियों का हुक्का पानी तक बन्द कर देती हैं। यह दुष्प्रवृत्ति है। सैद्धान्तिक मतभेद होने पर ही ऐसा होना चाहिए अन्यथा नहीं। अच्छे पत्रों तथा संस्थाओं को इससे बचना चाहिए। यह स्वेच्छाचारिता है।

महर्षि का कालजयी ग्रन्थ सत्य–अर्थ का प्रकाश कर रहा है तथा करता ही रहेगा। इसके ही न्यास का यह पत्र भी सत्य–अर्थ का सौरभ बिखेरता ही रहेगा जिससे सत्य–अर्थ के प्रकाश में पाठक सत्य–अर्थ के सौरभ से भी अपने कानों, हृदय तथा मन को सुवासित करते रहेंगे ऐसी कामना एवं आशा के साथ।

डॉ. रघुवीर वेदालंकार जी
बी- २६६, सरस्वती विहार
नई दिल्ली- ११००३४

।।ओ३म्।।

सत्यार्थ सौरभ का महत्व

गत 5000 वर्षों के अन्तराल के बाद भारत में एक महापुरुष हुआ जिसने सत्य के महत्व को समझा और मानव मात्र को समझाने का प्रयास किया। उसी सत्य को संसार भर में प्रतिष्ठा दिलाने और स्थापित करने के लिए उसने निज जीवन का बलिदान कर दिया। सत्य का इतना बड़ा आग्रही, उपासक और प्रचारक इस युग में ढूँढ़ने पर भी नहीं मिलेगा। इस महापुरुष का नाम है 'महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती'।

अपने प्रवचन और लेखन में सत्य शब्द का इतना अधिक प्रयोग करने वाला अन्य कोई महापुरुष दिखाई नहीं देता। ऐसा निर्भीक और स्पष्ट वक्ता जिसे कोई भी विचलित न कर सका। सत्य के लिए संग्राम करने वाला अपराजेय योद्धा अडिग हिमालय सा, दृढ़ वृत्ति वाला था वह। उसका उद्घोष था कि–

'सत्य के ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।'

'सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिए'।

'सत्योपदेश के बिना अन्य कोई भी मनुष्य जाति की उन्नति का कारण नहीं है'

इसी सत्य की मानव मात्र को पहचान कराने और उसे प्रतिष्ठा दिलाने के उद्देश्य से उसने एक अद्भुत ग्रंथ की रचना की जिसका नाम है सत्यार्थ प्रकाश। इस ग्रंथ का लेखन–संशोधन जिस पावन धरती पर बैठकर किया गया वह है महाराणा का उदयपुर। उदयपुर के गुलाबबाग में स्थित नवलखा महल में श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास स्थापित है। यहीं से सत्यार्थ प्रकाश में निहित सत्य–अर्थ को संसार भर में प्रचारित और प्रसारित करने के उद्देश्य से एक मासिक पत्र 'सत्यार्थ–सौरभ' प्रकाशित होता है। सत्यार्थ सौरभ के अब तक 99 अंक प्रकाशित किए जा चुके हैं और 100 वें अंक के प्रकाशन की तैयारी हो रही है। इसलिए इसके प्रकाशकों और पाठकों के लिए यह प्रसन्नता का अवसर है। इस पत्र को शुद्ध आधार प्रदान करने और अधिक उपयोगी, और लोकप्रिय बनाने की दृष्टि से समीक्षा का भी अवसर है।

सत्यार्थ प्रकाश का सत्य वेदों से लिया गया है। वेदों के अनुसार मानवीय व्यवहार में सत्य ही वह प्रथम तत्व है जिसके बिना मानव जीवन सफल नहीं हो सकता। यह उसी प्रकार जीवन की अनिवार्य प्रथम आवश्यकता है जैसे नवजात शिशु के लिए दूध। वैदिक कर्मकाण्ड का पहला पाठ इसी से प्रारम्भ होता है। वहाँ कहा गया है कि–

'अमेध्यो वै पुरुषः यदनृतम् वदति'

निरन्तर

पुरुष अपवित्र,असंस्कृत और अग्राह्य है, क्योंकि वह झूठ बोलता है और जो झूठ बोलता है वह न परिवार के लिए उपयोगी है न ही समाज और राष्ट्र के लिए। वह नालायक है। वेदों का उद्देश्य मनुष्य को लायक बनाना है। लायक का तात्पर्य है मनुष्य को सत्यमानी, सत्यवादी और सत्यकारी बनाना।यही प्रथम करणीय है।इसका फल है–

तेन पूति अन्तरतः।इससे मनुष्य भीतर से पवित्र हो जाता है।

'पवित्र पूतो व्रतमुपयाति' पवित्र शुद्ध होकर व्यवहार क्षेत्र में जाता है। मनःसत्येन शुद्ध्यति, मन सत्य से ही शुद्ध होता है और मन वह साधन है जिसके बिना कोई कार्य नहीं हो सकता। 'यस्मान्नृते किंचन कर्म क्रियते'। अतः एक स्वस्थ समाज की संरचना के लिए सत्य की प्रतिष्ठा ही प्रथम कर्तव्य है। मानवीय व्यवहार में सत्य की स्वीकृति देना ही व्रत ग्रहण करना कहा गया है। व्यवहार का प्रारम्भ करने से पहले मनुष्य कहे कि–

अग्ने व्रतपते व्रतम् चरिष्यामि, तच्छकेयम् तन्मे राध्यताम्। इदमहम् अनृतात् सत्यमुपैमि।।

हे परमेश्वर! अब मैं व्रत पर चलूँगा आप उसे सिद्ध करें।

व्रत क्या है ?

यह मैं झूठ से परे होकर सत्य के समीप जाता हूँ। 'इदं हि व्रतम् यत्सत्यम्'। यही व्रत मनुष्य को आर्य और आर्य से देवता बनाता है। वेदों का उद्देश्य मनुष्य को देवता बनाना है।

देवता कौन है ?

'सत्यम् वै देवा अनृतम् मनुष्याः'

सत्य ही देव हैं और झूठ मनुष्य।

मनुष्य के नीचे असुर हैं। एक ओर देव हैं दूसरी ओर असुर। देवों की ओर जाने के लिए आर्य बनना होता है और असुरों की ओर जाने के लिए दस्यु बनना होता है। आर्य बनता है व्रती होकर और दस्यु बनता है व्रतहीन होकर। सत्य का ग्रहण कर लेना ही व्रती होना है।

'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' का यही तात्पर्य है। व्रती ही स्वामी दयानन्द का आर्य है और व्रती जनों का समाज ही आर्य समाज है। सत्यार्थ प्रकाश न्यास का दायित्व बहुत ही कठिन है जिसे उसने निभाने का संकल्प लिया है। 'सत्यार्थ सौरभ' इसका एक माध्यम है। वह अपने उद्देश्य में कृतकार्य हो ऐसी हमारी कामना है, ईश्वर हमें शक्ति प्रदान करें।

शुभाकांक्षी
– आचार्य वेदप्रिय शास्त्री
महर्षि दयानन्द आश्रम, सीताबाड़ी
पोस्ट-केलवारा, जिला-बारां (राजस्थान) ३२५२१६
चलभाष- ७६६५७६५११३

।।ओ३म्।।

सत्यार्थ सौरभ की सफलतम १०० अंकों की बधाई

आर्य जगत् के समस्त पत्र–पत्रिकाओं में सत्यार्थ सौरभ पत्रिका का अपना महत्वपूर्ण स्थान है।इस पत्रिका की भाषा, भाव, शैली अत्यन्त सरल और सहज होने के साथ–साथ इतनी सारगर्भित है कि इसके प्रत्येक अंक को बार–बार पढ़ने का मन करता है।इस पत्रिका का मैं आरम्भ से पाठक रहा हूँ।केवल यही पत्रिका ऐसी है जिसमें मौलिक लेखन और स्वास्थ्य सम्बन्धी लेख पर्याप्त मात्रा में मिलते हैं।समयानुकूल लेखों के साथ सुन्दर डिजायनिंग मन को मोह लेती है।सत्य की सुगन्ध से विश्व के कोने–कोने को महकाने वाली सत्यार्थ सौरभ पत्रिका ने अपनी सफल शतकीय आकर्षक पारी पूर्ण की है, इसके 100 अंकों के सफलतम प्रकाशन की श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर को लाख–लाख बधाई।इस महान् उपलब्धि के लिए सत्यार्थ सौरभ के समस्त अधिकारी, कार्यकर्त्ताओं सहित सम्पादक तथा पूरे सम्पादक मण्डल को बहुत–बहुत बधाई और शुभकामनाएँ।

महर्षि दयानन्द सरस्वती की प्रमुख रचनाओं में से एक 'सत्यार्थप्रकाश' जो सम्पूर्ण विश्व में एक ऐसा अनूठा महान् ग्रन्थ है जिसको पढ़कर लाखों लोगों को सन्मार्ग मिला है, जीवन का लक्ष्य और उद्देश्य ज्ञात हुआ है, ऐसे सत्यार्थप्रकाश के यथार्थ सार को जन–जन तक पहुँचाने वाली वेद ज्ञान की सन्देश वाहिका सत्यार्थ सौरभ का प्रत्येक अंक अपने आप में पूर्ण रूपेण कल्याणकारी शिक्षाओं का सागर सिद्ध हुआ है।इसके नियमित स्तंभों में मानव जीवन के सर्वांगीण विकास की शिक्षाओं का समावेश रहता है।ऐसी पत्रिका के 99 अंक प्रकाशित हो चुके हैं और यह 100वां अंक पाठकों के हाथों में शोभायमान है।इस श्रमसाध्य कार्य के लिए मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि यह कार्य निरन्तर गतिशील रहे और पत्रिका के प्रति पाठकों की रुचि निरन्तर बढ़ती रहे।यह पत्रिका खूब फले–फूले, सम्पूर्ण विश्व में सत्य का प्रकाश करे और मानव–मात्र को सुदिशा प्रदान करे।

पुनः मंगलमय शुभकामनाओं सहित ।

- विनय आर्य
महामंत्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली

।।ओ३म्।।

प्रिय बन्धु श्री अशोक जी आर्य,

नमस्ते। गत माह आपका एक पत्र प्राप्त हुआ था। उससे ज्ञात हुआ कि श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास द्वारा प्रकाशित 'सत्यार्थ सौरभ' अप्रैल 2020में आप सौ वां अंक प्रकाशित करने जा रहे हैं। आजकल के अर्थ प्रधान युग में पत्र–पत्रिकाओं को लम्बी अवधि तक चलाये रखना वास्तव में बड़े धैर्य और साहस का कार्य है। अर्थ की दृष्टि उन पर सदैव लगी रहती है। केवल वही पत्र–पत्रिकाएँ टिकी रह सकती हैं जो समाज को विभिन्न सामाजिक समस्याओं का उचित हल प्रस्तुत कर सकने की सच्चाई रखती हों। राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक और आर्थिक विषयों पर युगानुरूप विचार प्रस्तुत कर समाज का मार्गदर्शन करने के योग्य जिनमें विद्वानों के लेख हों वे पत्र–पत्रिकाएँ निश्चित रूप से पाठकों को अपनी ओर आकर्षित करने में सफलता प्राप्त करती हैं। वास्तव में सत्यार्थ सौरभ की गणना ऐसी पत्र–पत्रिकाओं में की जाती रही है। मैं नियमित रूप से इसके प्रकाशन के समय से ही इसका पाठक रहा हूँ। पत्रिका की कुछ विशेषताएँ इस प्रकार हैंः– पत्रिका नियमित रूप से पहुँच रही है। पत्रिका को हाथ में लेते ही उसका मुख पृष्ठ पाठक को आकर्षित कर लेता है। उसके सुन्दर आकर्षक चित्र के साथ ही कोई महत्वपूर्ण कोटेशन पढ़कर मन प्रसन्नता से झूम उठता है। फिर अतिरिक्त पिछला पृष्ठ भी सुन्दर आकर्षक चित्र के साथ कोई महत्वपूर्ण कोटेशन को अपने में समाये हुए निकलता है। फिर पत्रिका का कागज भी टिकाऊ एवं मूल्यवान है। कागज को हाथ से स्पर्श करते ही लगता है कि जैसे किसी मूल्यवान दस्तावेज को स्पर्श कर रहे हों। अनुक्रमणिका वेद सुधा से प्रारम्भ होती है।

श्री महावीर प्रसाद द्विवेदी का प्रसिद्ध कथन है 'साहित्य समाज का दर्पण है।' इस सूक्ति की सिद्धि श्री अशोक आर्य जी ने अपने लेख दिसम्बर 2019 माइण्ड लिंचिंग, अंक जनवरी 2020 के लेख माइन्ड लिचिंग, फरवरी 2020 के लेख 'मर्यादाओं का क्षरण', मार्च 2020 के लेख 'ये उत्थान है या पतन हो रहा है' के द्वारा सफलतापूर्वक की है। वास्तव में ये लेख समाज के दर्पण ही हैं। इन लेखों को पढ़कर मुझे लगा कि श्री अशोक आर्य जी ने अपने सूक्ष्म निरीक्षण द्वारा समाज को देखा है और उसका वास्तविक चित्रण किया है। फिर विद्वानों द्वारा प्रेषित अन्य लेख भी कम महत्वपूर्ण नहीं हैं। मेरे पास इस समय नवम्बर 2019 से मार्च तक की पत्रिकाएँ रखी हैं। इनमें विज्ञान से सम्बन्धित श्रेष्ठ लेखों को स्थान मिला है। नवम्बर 2019 में 1. क्या सूर्य पर जीवन सम्भव है। 2. वेद और भौतिक विज्ञान, दिसम्बर 2019 में पुनः वेद और भौतिक विज्ञान, जनवरी 2020 में आयुर्वेदिक योग उपचार, फरवरी 2020 में बसन्त ऋतु में स्वस्थ रहने के उपाय तथा मार्च 2020 में स्वास्थ्य क्या है। ये सभी लेख पढ़ने योग्य हैं। इस पत्रिका में इतिहास, धर्मशास्त्र तथा समाजशास्त्र पर भी निरन्तर उत्कृष्ट लेख प्रकाशित हो रहे हैं। मैं स्वयं तो अपना लेख यह सोचकर दे ही नहीं रहा हूँ कि कहीं मेरे लेख के कारण किसी विद्वान् का लेख अप्रकाशित न रह जाये।

अन्त में मैं सम्पादक श्री अशोक जी आर्य को उनके श्रेष्ठ सम्पादन के लिए बधाई देता हूँ तथा सत्यार्थ सौरभ के लिए शुभकामना प्रेषित करता हूँ कि यह निरन्तर विकास के पथ पर अग्रसर होती रहे। इतिशम्।।

– आपका शुभाकांक्षी
शिवनारायण उपाध्याय
73–शास्त्री नगर, दादाबाड़ी
कोटा–324009 राजस्थान

नीला जहर

गतांक से आगे ....

निश्चित तौर पर आज सामान्य भारतीय परिवार सहजता से दूरदर्शन के कार्यक्रम नहीं देख सकते, हर समय भय रहता है कि कोई ऐसा दृश्य न आ जाये जो नजरें चुराने पर मजबूर करदे। ऐसा नहीं है कि प्यार पूर्व की फिल्मों में नहीं होता था। सब कुछ होता था पर भारतीय मर्यादा की सीमा में। तब सेंसर बोर्ड भी अपनी कैंची चलाता था। अब सेंसर बोर्ड तो है पर मानक संभवतः बदल गए हैं। क्या कुछ 'हिंसा' व 'सीमाहीन खुलापन' में दिखाना शेष रह गया है? क्या आपको नहीं लगता कि जो कुछ बड़े या छोटे परदे पर दिखाया जा रहा है वही समाज में घटित हो रहा है। आज केवल दुष्कर्म नहीं हो रहे बल्कि उसमें क्रूरतम प्रयोग क्यों हो रहे हैं? निर्भया के साथ जो पाशविकता घटित हुयी थी उसे याद कर रूह काँप जाती है। ट्विंकल जैसी मासूम बच्ची जब अपने ऊपर हुए आक्रमण से चीख रही होगी और 'अंकल मुझे छोड़ दो' की गुहार लगा रही होगी तब भी उससे दुष्कर्म करने वाला तथा बेल्ट से उसका गला घोट देने वाला, क्या इंसान कहा जा सकता है।

हिंसा और वासना में आकण्ठ डूबा यह फटने वाला बम समाज की प्रयोगशाला में ही तैयार हुआ है। उसकी निर्माणशाला है मुफ्त या सस्ते इंटरनेट के माध्यम से उपलब्ध सहस्रों की संख्या में सहज मुफ्त में उपलब्ध पोर्न साइट्स।

एक विशेषज्ञ का कहना है कि 'पोर्न दिमाग को कोकीन से अधिक प्रभावित करता है। पोर्न देखने के बाद लोग ऐसी गतिविधियाँ भी करना चाहते हैं जो प्राकृतिक तौर पर उनके दिमाग और मनोवृत्ति का हिस्सा नहीं। चाहे वह जानवरों के साथ हो, कई लोगों के साथ हो, या कष्टकारी हो। अश्लीलता वेबसाइट पर इस तरह से युवाओं को आकर्षित कर रही है कि ४० से ७० प्रतिशत लोग कभी न कभी इन अश्लील साइट्स को देखते हैं। युवाओं को भटकाने वाला यह पड़ाव उनको शारीरिक एवं मानसिक रूप से रुग्ण ही नहीं कर रहा है बल्कि उन्हें बलात्कार, दुष्कर्म की दिशा में भी धकेल रहा है। चूंकि मानव की, 'देखकर' उसे अपने व्यावहारिक जीवन में अपनाने की प्रवृत्ति होती है, इसी कारण समाज में आज तेज गति से दुष्कर्म के मामले घटित हो रहे हैं। इसका मूल कारण इण्टरनेट पर परोसा जाने वाला कामुकता एवं अश्लीलता का ये दूषित माहौल ही है।

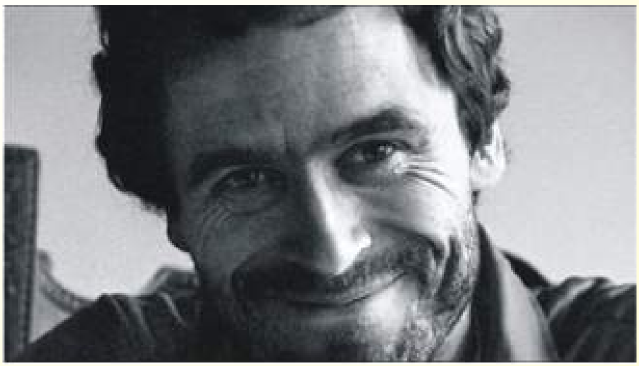

एक अन्य समाजशास्त्री का कहना है कि 'चारों तरफ स्त्री को यौन वस्तु के रूप में पेश करने और पुरुष की यौनेच्छा को बढ़ाने के लिए जितने इंतजाम किये गए हैं, उन सबका बलात्कार के बढ़ते प्रतिशत से सीधा सम्बन्ध है। ऐसे में इस बात की उम्मीद न के बराबर ही है कि मौत की सजा बच्चियों के साथ बलात्कार की घटनाओं को कम कर देगी।'

कभी किसी ने सोचा कि पोर्न में काम करने वाले पुरुष और महिलाओं पर लाखों रुपये खर्च करने वाले इसे मुफ्त में क्यों परोसते हैं? क्या वे परोपकार कर रहे है? नहीं उनको विज्ञापन मिल रहे हैं जिनसे उनकी अंधी कमायी हो रही है। इन पोर्न साइट्स को विज्ञापन देते क्यों हैं? क्योंकि वहाँ दर्शक सर्वाधिक मिलेंगे। वस्तुतः यह एक विश्वव्यापी चक्रव्यूह है जिसका नियंत्रण

केवल 'धन' के हाथ में है। समाज को पतन के मार्ग पर ले जाने की यह सोची समझी साजिश है इससे भी इनकार नहीं किया जा सकता।

पहले बुराई को बुराई माना जाता था। जो उस बुराई में डूबा था वह कम से कम यह समझता था कि वह गलत काम कर रहा है। ऐसी स्थिति में आशा की जा सकती थी कि वह उस बुराई को कभी न कभी छोड़ देगा। दूसरे ऐसी स्थिति में लोकलाज के चलते भी वह छुपकर यह कार्य करता था। यद्यपि छुपकर कुकृत्य करना अभीष्ट नहीं है पर एक बात अवश्य है कि परिवार के अन्य सदस्यों या परिचितों का प्रोत्साहन नहीं मिलता था तथा लोकलाज उसे अपनी उस बुराई को छोड़ने में मदद करती थी।

आज सबसे बड़ी चुनौती है कि बुराइयों का सामान्यीकरण किया जा रहा है। और यह इतने सहज तरीके से हो रहा है कि कब लगभग हर सीरियल में बाप-बेटे और घर की महिलायें भी शराब सेवन करने लगीं आपको पता ही नहीं चला। कब स्वच्छंदता के पेरोकारों ने आपके घर के सदस्यों के मस्तिष्क को अपनी गिरफ्त में ले लिया आपको पता ही नहीं चला। यह सर्वाधिक खतरनाक चुनौती है। कितनी सहजता से नयी परिपाटियाँ आपके घर में प्रवेश कर रहीं हैं इस हेतु एक लघु सीरियल का उदाहरण मात्र दूँगा। वैसे यह सीरियल आज के वातावरण में एक शीतल बयार जैसा है। एक मिडल परिवार की कहानी बहुत सहज और वास्तविक जीवन जैसी। उसमें एक एपिसोड में सीरियल की दिशा के विपरीत फिर पाँच अक्षरों के एक शब्द को डाला गया है। वह भी आज के वातावरण की नयी खोज है। फिल्मी परिवारों से सामान्य परिवारों में इसका प्रवेश कराया जा रहा है। शब्द है 'CRUSH'। क्या मतलब है इसका? सीरियल के ११-१२ वर्षीय बालक को अपनी सहपाठी से प्रेम जैसा कुछ हो जाता है। उसका मध्यमवर्गीय परिवार इसको अत्यन्त सहजता से लेता है बल्कि प्रोत्साहित करता प्रतीत होता है। संस्कारों को लेकर पूर्ण सजग माँ को भी इस प्रसंग में मुस्कराते हुए दिखाया है। और इस बच्चे का साथी तो अपनी अध्यापिका पर 'CRUSH' रखता है। (जैसे 'मेरा नाम जोकर' में ऋषि कपूर सिमी ग्रेवाल पर)। संक्षेप में ये वे तरीके हैं जिनसे आपका, आपके परिवार के सदस्यों का मस्तिष्क किसी और के कब्जे में हो जाता है और आपको तब ही पता चलता है जब कुछ लीक से हटके अप्रत्याशित हो जाता है।

विश्वभर में मानवता शर्मसार हो रही है पर इनको उससे कुछ लेना-देना नहीं है। चार्वाक के इन चेलों का मानना है कि जो कुछ है यह जीवन है। खाओ, पीयो, मौज उड़ाओ क्योंकि आप ईश्वर नाम की किसी सत्ता के प्रति जवाबदार नहीं हैं। वे स्वार्थ में अन्धे होकर पोर्न हेतु भी सामान्य स्वीकृति के उपाय कर रहे हैं। पोर्न एक्टर अब समाज में प्रतिष्ठित हो रहे हैं, प्रसिद्ध फिल्म निर्देशक की एक लघु फिल्म आइना है कि समाज को दिशा देने वाले लोग समाज को किस दिशा में ले जाना चाहते हैं।

'परिवार में एक बेटी क्या बनेगी जब यह चर्चा चलती है तो वह बिना किसी झिझक के एक महिला पोर्न कलाकार का नाम लेकर कहती है कि मैं वो बनूँगी। परिवार एक बार तो सन्न रह जाता है फिर फट पड़ता है। पर वह लड़की १० मिनट में जिस तरह के तर्क देती है, बिना किसी संकोच के कहती है कि जिस प्रकार मम्मी हाउस वाइफ है, दीदी टीचर, पिताजी असिस्टेंट मैनेजर, पड़ोसी पायलट है उसी प्रकार वो पोर्न स्टार बनना चाहती है।' इस फिल्म को देखने के लिए भी पर्याप्त धैर्य की आवश्यकता है। जब ऐसी फिल्में बनायी जाती हैं तथा कोई विरोध नहीं होता तब आप किस मुँह से संस्कारित समाज की बात कर सकते है? यहीं यह भी लिख दूँ कि जब हमारे मान्य न्यायालय भगवान श्रीकृष्ण को राधा (कल्पित) के साथ 'लिव इन' सम्बन्ध में बताते हुए न्यायिक निर्णय में उल्लेख करने से नहीं चूकते, जब व्यभिचार को अपराध की सूची से मुक्त कर एक सन्देश दिया जाता है, जो व्यभिचार की स्वीकारोक्ति एवं इससे कारित करने वालों को अपराधबोध से मुक्त करने की पृष्ठभूमि तैयार करता है और इस सबको लेकर कोई टिप्पणी

तक समाज में नहीं होती और होटलों के विज्ञापनों में यह जोड़ दिया जाता है कि 'अविवाहित जोड़ों के लिए भी कमरे उपलब्ध' फिर आप मान ही लीजिये कि माइंड लिंचिंग ने अपना कार्य सफलता पूर्वक पूरा कर लिया है। हो सकता है अनेक लोगों को पोर्न साइट्स पर जाना असहज लगता हो वे इसे अनुचित मानते हों तो भी चिन्ता नहीं। उनके लिए 'बेव सीरिज' तैयार हैं। लगभग एक दर्जन बेव सीरिज बनाने वाले प्लेटफार्म मैदान में हैं। जिन हालीवुड फिल्मों को हिन्दी दर्शक नहीं समझ पाते थे उनके लिए हिन्दी अनुवाद सहित उपलब्ध हैं। अब आप किसी भाषा के कंटेंट को अपनी भाषा में देख-सुन सकते हैं। इन साइट्स तक पहुँचना भी कोई अत्यन्त महंगा नहीं रखा है। कुछ तो बिलकुल मुफ्त हैं। कुछ को आपकी फोन कम्पनी प्रायोजित कर रही है। मुफ्त इसलिए हैं ताकि आपको लत लग जाय। हमारी माताजी बताती थीं कि अंग्रेजों के समय में जब चाय बेचनी प्रारम्भ की गयी तो लोगों को मुफ्त दी जाती थी। उससे पहले कोई भारतीय चाय से परिचित नहीं था। अब आज स्थिति देख लीजिये कितने हैं जो चाय नहीं पीते?

वैसे तो अब फिल्मों पर भी कोई प्रतिबन्ध नहीं रहा परन्तु बेव सीरिज तो सेन्सर से दूर ही हैं। आपने कभी गालियों की नवीन और भयानक किस्म सीखनी हो तो, अराजकता और हिंसा के रौद्र रूप के दर्शन करने हों तो आप सही जगह पहुँचे हैं। क्या पहले कभी माफिया और पुलिस पर फिल्में नहीं बनी हैं? पर उन्होंने प्रायः मर्यादा का दायरा नहीं लांघा, पर इन विषयों पर आप बेव सीरिज देखें। गालियों और हिंसा का तूफान जैसे उमड़ पड़ा हो। कोई पुलिस वाला बिना गाली के रह ही नहीं सकता यह स्थापित किया जा रहा है फिर आप जो पुलिस को सभ्य आचरण की ट्रेनिंग दे रहे हैं उसका क्या होगा? निर्भया रेप पर एक अत्युत्तम बेव सीरिज बनी है-'दिल्ली क्राइम'। कमाल का निर्देशन है। हृदय को छू लेती है। डीसीपी की भूमिका में शेफाली छाया ने लाजबाब अभिनय किया है। पर आखिर निदेशक ने एक गाली उनके मुँह से भी दिलवा ही दी। यह है आज के फिल्मकार की सोच। इसके लिए, पोर्न साइट्स के लिए, अब टीवी की आवश्यकता नहीं है मोबाइल और इसका डाटा जिन्दाबाद। कभी भी, कहीं भी। हिंसा, गाली और नग्नता के परिवेश में आप क्या आशा कर सकते हैं। क्या सदाशयता, शिष्टता तथा ब्रह्मचर्य का महत्त्व और सदाचार एक मिनट भी टिक पायेंगे? इन्द्रियों की भूख की तृप्ति सर्वोपरि हो गयी है। नतीजा विश्वासपात्र कर्मचारी भी आपके घर में हिंसा, लूट और व्यभिचार व दुष्कर्म से परहेज नहीं करते।

इस सब में शराब की कमी न रहे इसका भी ध्यान रखा जा रहा है। अधिकाधिक दुकानें खोली जा रही हैं। अपनी नयी पीढ़ी की बर्बादी की कीमत पर राजस्व कमाया जा रहा है। 'गिल्ट' का कोई प्रश्न नहीं, डिस्क्लेमर का कानून बना दिया है न। नग्न फिल्मों पर डिस्क्लेमर है 18+ के लिए , शराब, धूम्रपान के लिए डिस्क्लेमर है 'स्वास्थ्य के लिए हानिकारक', हमारा दायित्व समाप्त। (वेव सीरिजों में तो इस औपचारिकता की भी आवश्यकता नहीं है)।

शराबखोरी हिंसात्मक व्यवहार को किस कदर हवा देती है यह जाना माना तथ्य है। दुष्कर्मों तथा शराब में क्या कोई सम्बन्ध हमारे समाज निर्माता नहीं देख पा रहे हैं? निर्भया हो, हैदराबाद हो या ट्विंकल, सभी अपराधों में दुष्कर्मियों ने शराब का सेवन किया हुआ था। अनेक शोध इस बात का समर्थन करते हैं कि मद्यपान तथा दुष्कर्म में निश्चित सम्बन्ध है। एक उद्धरण यहाँ देना उचित होगा।

At least one-half of all violent crimes involve alcohol consumption by the perpetrator, the victim, or both (Collins and Messerschmidt 1993). Sexual assault fits this pattern. Thus, across the disparate populations studied, researchers consistently have found that approximately one-half of all sexual assaults are committed by men who have been drinking alcohol. Depending on the sample studied and the measures used, the estimates for alcohol use among perpetrators have ranged from 34 to 74 percent (Abbey et al. 1994; Crowell and Burgess 1996)

वस्तुतः मद्यपान बुद्धिनाशक है इसमे सन्देह नहीं। महर्षि दयानन्द ने तो स्पष्ट लिखा ही है। एक विशेषज्ञ के अनुसार- Ethanol has a negative influence on brain structures which are responsible for sexual and violent behavior. Alcohol consumption increases aggression, and in some people, sexual desire and emotional instability.

विडम्बना यह है कि आज के बुद्धिजीवी इस सबसे चिंतित नहीं हैं वरन् वे इसे प्रोत्साहन देने में लगे हैं। एक जाने माने फिल्म समीक्षक श्री चौकसे जो फिल्म 'बीरे दी वेडिंग' के जैसी अत्यन्त फूहड़ किस्म की फिल्म की समीक्षा करते हुए उसके एक

अत्यन्त जुगुप्सा पैदा करने वाले दृश्य (हमारे विचार से इस दृश्य को जिसे चौकसे जैसे गंभीर समीक्षक साहसी और महान् बता रहे हैं आप सपरिवार देख ही नहीं सकते सिवाय उनके जिनके लिए हर तरह की आजादी यहाँ तक कि कपड़ों और शिष्ट व्यवहार से आजादी भी प्रगति की प्रतीक है) और उसको अभिनीत करने वाली अभिनेत्री के बारे में लिखते हैं- 'इसी तरह 'वीरे दी वेडिंग' में उनके (स्वरा भास्कर) द्वारा अभिनीत एक साहसी दृश्य हमें महान् विचारक सिमोन द बोउआर के कथन की याद ताजा कराता है कि जब एक मध्यम आय वर्ग की महिला बुर्जुआ प्रसाधन को नकारकर अपने स्वाभाविक रूप में अपना शरीर दिखाती है तो पुरुष भयभीत हो जाते हैं। सौन्दर्य का ताप उन्हें चौंधिया देता है। तथाकथित नैतिकता के स्वयंभू पहरेदार तिलमिला जाते हैं .... इंटरनेट पर उपलब्ध मंच ने यह सुविधा प्रदान की है कि सिनेमाघरों में प्रदर्शन के बाहर भी एक संसार है जहाँ उन्मुक्त होकर सृजन किया जा सकता है। स्वरा और ध्वनि कभी सीमा में नहीं बंधते।' (चौकसे एक गंभीर समीक्षक हैं अतः उनकी समीक्षा की समीक्षा करना हमारे अधिकार क्षेत्र में नहीं आता पर इस स्तम्भ को पूरा पढ़ने पर यह लगता है कि 'स्वरा-मुग्धता' का यह लेख राजनीतिक प्रतिबद्धता की दखल भी रखता है) यहाँ न चाहते हुए भी, पाठक स्वयं उस 'साहसी' दृश्य का मूल्यांकन कर सकें, लिख दें कि वहाँ स्वरा अभिनीत महिला पात्र 'यांत्रिक सहयोग से सुख-सम्पादन' में निमग्न हैं कि उनके पति अन्दर आते हैं तो यह महिला उनको रोक कर बिना किसी झिझक के अपना आवश्यक कार्य पहले सम्पादित करती है और इसी साहसी कार्य को ऊपर चौकसे जी ने दार्शनिक भाषा में महिमा मंडित किया है। ऐसा प्रतीत होता है कि जिस आदर्श समाज, जिसमें महिलायें ऐसी साहसी हों, की प्रशंसा स्तंभकार कर रहे हैं हर घर में ऐसा साहस होने लग जाय तो स्तंभकार के के अनुसार आदर्श समाज की स्थापना हो सकेगी। ऐसे फूहड़पन को साहस बताने वाले एक चौकसे नहीं हैं अनगिनत हैं। 'अभी ग्रेमी अवार्ड में अभिनेत्री प्रियंका चौपड़ा ने जो परिधान पहना वह इतना 'दिखाऊ' था कि उसकी चर्चा होने लगी, कुछ आलोचना भी हुयी तो उनके समर्थक लिखते हैं कि 'ऐसे परिधान पहनना 'साहस' की बात है।' ये लोग लाखों लोगों के रोल मॉडल हैं तो समाज किस दिशा में चलेगा इस बात का अनुमान लगाना कठिन नहीं है।

चिन्त्य यह है कि जब सारा परिवेश 'काममय' है और इसे प्रोत्साहन देने वालों की संख्या भी कम नहीं है तो आप इन्द्रिय-संयमन के बारे में सोचते भी हैं तो वह बेबकूफी ही होगी। ऐसा परिवेश दुष्कर्मों का जनक भी बन जाता है आप इससे कदापि इनकार नहीं कर सकते।

समाज किस दिशा में जा रहा है इसकी संपुष्टि इस वर्ष के पद्म पुरस्कारों के विजेताओं के नामों पर दृष्टि डालने से हो जाती है। कला के क्षेत्र में कुछ लोगों का नाम है जो आश्चर्य में डालता है। एक नाम एकता कपूर का है। अत्यन्त निराशा होती है कि

संस्कारों की दुहाई देने वाली मोदी सरकार ने क्या यह पुरस्कार 'क्या कूल हैं हम' जैसी फिल्मों और 'गंदी बात' जैसी वेब सीरिज के लिए दिया है अथवा ALT BALAJI जिस प्रकार समस्त सामाजिक मर्यादाओं की धज्जियाँ उड़ाने में जुटा हुआ है उसका यह पुरस्कार है?

जहाँ सारी तथाकथित बौद्धिक जमात मर्यादाओं के तहस-नहस को ही प्रगति का द्योतक मानती हो, जहाँ फिल्म केसरी के शानदार गीत,'तेरी मिट्टी में मिल जावां....' जो रोम-रोम में देशभक्ति का संचार करते हुए सीधे आत्मा को स्पर्श करता है, की उपेक्षा कर बेहूदी फिल्म 'गली बाय' के बेहूदे गाने को फिल्म फेयर पुरस्कारों में पुरस्कृत किया जाता है, तो ऐसी स्थिति बहुत कुछ कह देती है।

यहीं सांत्वना भी मिलती है कि स्थानीय 'दैनिक भास्कर' पत्र ने बीमारी का सही निदान करते हुए पोर्न साइट्स के विरुद्ध एक अभियान छेड़ दिया है। दोनों तरह के पक्ष आपके सामने हैं आप किसको प्रोत्साहन देंगे यह निर्णय आपको करना है। आर्य समाज को भी प्रबलता से आगे आना होगा।

पाठकगण! यह एक अंतहीन सिलसिला है जिस पर लिखा जा सकता है। परन्तु हम एक और बात की ओर ध्यान दिलाकर इस शृंखला का समापन करेंगे वह है हर 'भारतीय उदात्त' का विरोध अभिव्यक्ति की आजादी के नाम पर करना। एक वेब सीरिज 'लैला' के नाम से बनायी गयी है। यह भविष्य के एक ऐसे देश की गाथा है जिसका नाम 'आर्यावर्त्त' है। फिक्शन फिल्म बनाना

कोई नयी बात नहीं है। भारत में भी मनोरंजन के उद्देश्य से कतिपय फिल्में बनायी गयी हैं। हालीवुड में तो यह सामान्य है। परन्तु इस फिल्म को डिस्क्लेमर के तहत काल्पनिक कहने पर भी निर्माता साफ-साफ संकेत कर रहे हैं 'आर्यावर्त्त' नाम रखकर, कि यह भविष्य का भारत है और आर्य-सभ्यता को अगर स्थायी किया गया तो आज के बीस वर्ष का भारत ऐसा ही हो जाएगा, पूर्णतः बर्बर और असहिष्णु। एक अंतर्पंथीय विवाह की संतान का नाम लैला है। यह एक छोटी बच्ची है। ऐसे विवाह की संतान माता-पिता के पास नहीं रह सकती अतः बच्ची को शासन द्वारा उठा लिया जाता है किसी गुप्त जगह ब्रेन वाश करने के लिए। यह ब्रेन वाश किया हुआ बच्चा बस 'जय आर्यावर्त्त' के नारे लगाएगा उसकी सुप्रीमेसी के आगे माँ की ममता पराजित हो जायेगी। उक्त प्रकार की माँ को एक प्रकार के शुद्धि शिविर में रखा जाएगा। लैला की माँ को भी रखा गया। इस शिविर में जो यातनाएँ दी जाती हैं उनमें से दो महत्वपूर्ण हैं। एक में खाने की जूठन के ऊपर से महिलाओं को लोट-पोट होना पड़ता है। एक में एक महिला का विवाह कुत्ते के साथ किया गया। आपको आश्चर्य होगा कि वर्त्तमान में हिन्दू धर्म में जो कुछ कुरीतियाँ प्रचलित हैं उनमें से उक्त प्रकार की एकाधिक (मात्र) घटनाएँ हुयीं हैं उन्हीं को चुनकर आर्यावर्त्त के एक शुद्धि केम्प की सजा बताना बहुत कुछ कह देता है कि 'काल्पनिक' का डिस्क्लेमर तो eye wash है असल इरादा कुछ और है। एक बात और आर्यावर्त्त का जो भूगोल है उसके अन्दर अत्यन्त विकसित वैज्ञानिक प्रणालियाँ हैं जो कि आज के बीस वर्ष बाद संभव हैं परन्तु प्रदूषण के मारे यहाँ के रहवासी त्रस्त हैं। इसका उपाय ढूढ़ लिया गया है पर उसका प्रयोग थोड़ी हिचकिचाहट पैदा कर रहा है क्योंकि तब सम्पूर्ण अशुद्ध वायु आर्यावर्त्त की सीमा से बाहर किये गए अत्यन्त फटेहाल और पहले से ही नारकीय जीवन व्यतीत कर रहे 'दूशों' के हिस्से में आकर उन्हें विनष्ट करने का कारण बन जायेगी। पर 'जोशी जी' को परवाह नहीं। (जोशी उपनाम भी कुछ गाथा गा रहा है तथा 'दूश' यह नाम क्या आपको दस्यु से मिलता जुलता नहीं लग रहा? और यह संकेत नहीं कर रहा कि 'आर्य' और 'दस्यु' नाम यहाँ क्यों लाये गए हैं और 'काल्पनिक' कहकर भी सीरिज के निर्माता क्या कहना चाहते हैं)। आर्यावर्त्त क्या ऐसा कभी हो सकता है? क्या आर्यावर्त्त में उक्त दिखायी गयी संस्कृति संभव है? कदापि नहीं। इस पर बहुत कुछ लिखा जा सकता है परन्तु हम केवल यह कहना चाहेंगे कि भारत में भारतीयता को नीचा दिखाने तथा भारतीय संस्कृति अगर प्रभाव में रही तो फिल्म में दिखाया भविष्य दूर नहीं, ऐसे शरारतपूर्ण सम्प्रेषण मैकाले और मार्क्स के मानस पुत्रों द्वारा किये जा रहे हैं, और कहीं से एक आवाज भी नहीं उठ रही है यह दिन प्रतिदिन 'माइंड लिंचिंग' के बढ़ते प्रभाव का द्योतक है।

यह माइंड लिंचिंग नहीं तो क्या है कि कोई महाभारत की द्रौपदी को अबला समझे। जो द्रौपदी खचाखच भरी कौरव सभा में अपने पति पर प्रश्न उठा देती हो तथा भीष्म की आँखों में आँख डाल धर्म की परिभाषा पूछने का साहस करती हो, जो अपना अपमान करने वाले दु:शासन के रक्त में अपने केश भिगोने की प्रतिज्ञा करती हो और विराट नगर के कीचक को मृत्यु के घाट उतरवा देती हो, जो जब कृष्ण संधि करने जाते हों तब उन्हें अपने खुले केश दिखा अपनी प्रतिज्ञा का स्मरण करा देती हो उस सबला नारी को अबला तथा पुरुष प्रधान समाज की शिकार बताने के लिए महर्षि व्यास के महाभारत की उपेक्षा कर एक सामान्य लेखिका के उपन्यास को आधार बनाकर फिल्म बनायी जा रही हो (जिसमें दीपिका पादुकोण द्रौपदी का तथा आमिर खान कृष्ण का रोल करेंगे) तो स्पष्ट है जानबूझकर ऐतिहासिक तथ्यों को तोड़ा मरोड़ा जा रहा है। ताकि प्राचीन भारतीय समाज को प्राकृतिक न्याय से विहीन बताया जा सके।

ऐसी दिशा में केवल आपके महापुरुष आपका हाथ पकड़कर आपको इस दलदल से बचा सकते हैं। आपका पवित्र अतीत आपको दिशा दे सकता है पर उसे तो पहिले ही काल्पनिक होने का प्रमाणपत्र दिया जा चुका है (माइंड लिंचिंग के अन्तर्गत)। और आज माता-पिता अथवा कोई अन्य सज्जन संस्कारों की बात करें तो जब आपकी आँखें उसको एक अजूबे की तरह से हिकारत भरी अथवा अवज्ञा की नजर से देखते हैं तो वह उसी क्षण अप्रभावी हो जाता है। अगर वास्तव में आज के शासक युवाओं के हित-चिन्तक हैं तो शराब-शबाब और अन्य मादक तथा बुद्धिनाशक पदार्थों पर सम्पूर्ण कठोर प्रतिबन्ध लगाये बिना यह सम्भव नहीं है। प्राचीन भारतीय शिक्षण व्यवस्था तथा सामाजिक आदर्शों की स्थापना आवश्यक है।

– अशोक आर्य

चलभाष– ०९३१४२३५१०१, ०८००५८०८४८५

महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वि-जन्मशताब्दी लेखमाला

४

मूलशंकर की आयु जब 16 साल की थी तो एक दुःखद घटना घर में घटी। मृत्यु के साक्षात् प्रकोप से मूल जी का साक्षात् हुआ। हैजा के कारण उनकी छोटी बहिन की मृत्यु हो गई। इस विषय में स्वामी जी ने स्वयं लिखा कि- ''घर के सब लोग रोने लगे परन्तु मैं सोच विचार में पड़ गया और मेरे हृदय को ऐसा धक्का लगा कि ऐसे ही मैं मर जाऊँगा? सोच विचार में पड़ गया जितने जीव संसार में हैं उनमें से एक भी न बचेगा? इससे कुछ ऐसा उपाय करना चाहिए जिससे यह दुःख छूटे और मुक्ति हो। अर्थात् इसी समय से मेरे चित्त में वैराग्य की जड़ पड़ गई।''

दलितोद्धारक दयानन्द

'दयानन्द-उनका जीवन और कार्य' में सूरजभान जी ने लिखा है -

'दयानन्द के पास जाति-प्रथा को भारत के लिए अभिशाप समझने की दूरदृष्टि प्राप्त थी।' 'पुरुष-सूक्त' की गलत व्याख्या के आधार पर यह हिन्दू समाज को तोड़ने का कार्य कर रही थी। वे इस बात से बड़े दुखी थे कि यह अकेली संस्था भारत को एक राष्ट्र के रूप में विकसित होने में बाधक सिद्ध हो रही थी। ऊँच और नीच जाति के भेद ने भारत के लाखों पुत्रों और पुत्रियों को दास की स्थिति में पहुँचा दिया था जिनका मात्र स्पर्श अशुद्ध कर देता था। यह बहुत आश्चर्य की बात नहीं थी कि इनमें से बहुतों ने अपने पुरखों के धर्म को इसलिए त्याग दिया कि उनके साथ कम से कम मनुष्य की तरह तो व्यवहार हो सके। यह निश्चित रूप से आश्चर्यजनक था कि इस तरह के अमानवीय व्यवहारों के होते हुए भी लाखों अस्पृश्य लोग अपने पुरखों के धर्म से चिपके हैं। दयानन्द ने जाति के सिद्धान्त के विरोध में अपनी सशक्त आवाज बुलंद की और उसे अवैदिक बताया। उसने घोषणा की कि सभी मनुष्यों के साथ मनुष्य का और सबके साथ समान व्यवहार हो और सबको समान अवसर मिले। समाज में वर्गभेद वंशानुगत या जन्मगत न होकर चरित्रगत और कर्मगत होने चाहिए। शास्त्रों के प्रमाणों पर आधारित स्वामीजी की घोषणा अनसुनी नही रही।'

प्रसिद्ध संस्कृत विद्वान् के.पी जायसवाल के शब्दों में 'दयानन्द में बुद्ध की मानवता थी लेकिन उन्होंने इसके साथ शंकर के संरक्षक भाव को भी जोड़ लिया था। बुद्ध ने पूरे सामाजिक संगठन की निंदा की थी क्योंकि वह जन्म और जातिगत असमानता की मिथ्या अवधारणा पर आश्रित था और इस प्रकार एक सामाजिक क्रान्ति का आह्वान किया था। दयानन्द ने, दूसरी ओर, वेदों और वैदिक संस्कृति के प्रति इस परम्परागत रुढ़िवादी श्रद्धा पर बल दिया लेकिन शंकर की सीमाओं में नहीं रहे और उसके ऊपर उठे और घोषणा की कि जाति का सिद्धान्त गलत, अवैदिक और अहिन्दू है। ऐसी बातें जिनमें मनु के नियमों का प्रत्याख्यान किया गया हो (यद्यपि वे नियम प्रक्षिप्त ही थे- सं.) और मान्यता प्राप्त 'पुरुष सूक्त' के दृष्टिकोण का खंडन किया गया हो, हिन्दू समाज द्वारा स्वीकृत नहीं हो सकता था, जब तक यह दयानन्द जैसे राष्ट्रीय स्तर के व्यक्ति द्वारा पोषित न किया गया हो जो ऋषियों की सी सरलता से संस्कृत बोलता था, जिसमें नारद और दुर्वासा का त्याग था, जो बुद्ध की तरह अपनी वक्तृता की ज्वाला में अन्याय के कारणों को भस्म कर सकता था और जो शास्त्रार्थ में शंकर की तरह अप्रतिरोध्य था। वह एक महामानव सिद्ध हुआ।'

इस दुरवस्था को दूर करने में जो प्रयत्न महर्षि दयानन्द और उनके द्वारा स्थापित आर्य समाज ने किये वे सही दिशा में निस्वार्थ भाव से उठाये गए अद्भुत प्रयत्न थे, यद्यपि समाज ने उनका समुचित मूल्यांकन नहीं किया। आर्यसमाज के सदस्यों ने दलितोद्धार के क्रम में जो अकल्पनीय कष्ट सहे उनका वर्णन तो पूरी पुस्तक लिखकर भी नहीं हो सकता परन्तु 'आर्यसमाज के सप्तखण्डीय इतिहास' से एक-दो प्रसंग यहाँ उद्धृत कर इस आलेख को विराम देंगे।

महर्षि ने अपने जीवनकाल में ही अछूतों व दलितों का उद्धार करने तथा उन्हें समाज में समुचित स्थान दिलाने का प्रयत्न प्रारम्भ कर दिया था। उनके बाद आर्यसमाज ने भी इस ओर ध्यान दिया। पंजाब में दलितोद्धार आन्दोलन के प्रमुख नेता पंडित गंगाराम थे। मुजफ़्फरगढ़ जिले में कार्य करते हुए पंडित गंगाराम का ध्यान 'ओड़' नाम की एक जाति की ओर आकृष्ट हुआ जो हिन्दू और मुसलमानों के बीच की समझी जाती थी। उनके अधिकतर रीति रिवाज हिन्दुओं जैसे थे। पर वे अपने मुर्दों को जलाने के बजाय दबाया करते थे। हिन्दू इन्हें अछूत मानते थे। साधारणतया उन्हें 'ओड' नाम से जाना जाता था पर उनका पुराना नाम भगीरथ था। पंडित गंगाराम ने विचार किया कि इनको हिन्दू समाज से पृथक् रखना सर्वथा अनुचित है इसलिए उन्होंने ओड लोगों को

शुद्ध करके यज्ञोपवीत धारण करवाना प्रारम्भ कर दिया। मुलताननगर में बड़े पैमाने पर ओड़ों की शुद्धि का आयोजन किया तो उसका बहुत विरोध हुआ। मुलतान के हिन्दुओं ने इस योजना का स्वागत नहीं किया। यहाँ तक कि बिरादरी के भय से आर्य समाजी समाज मंदिर में ओड़ों की शुद्धि की अनुमति देने को उद्यत नहीं हुए पर पंडित गंगाराम इससे हताश नहीं हुए। उन्होंने शहर के बाहर लाला जसवन्त राय के बंगले पर ओड़ों का शुद्धि संस्कार सम्पन्न करवाया। इससे एक नई बात यह हुई कि अच्छी बड़ी संख्या में अछूत लोगों को हिन्दू समाज में समान स्थिति प्रदान की गई। ओड़ बच्चों की शिक्षा दीक्षा के लिए पंडित गंगाराम ने मुजफ़्फरगढ़ में पाठशाला भी स्थापित की। पंडित जी के प्रयास तब सफलीभूत हुए जब इस तथाकथित अछूत जाति के लोग आगे चलकर प्रतिष्ठित पदों पर नियुक्त हुए और उनमें से कतिपय ने पंडित का पद भी प्राप्त किया। बाद में दलितोद्धार का यह कार्य आर्य समाज के कार्यकलापों का महत्वपूर्ण अंग बन गया। मुजफ्फरगढ़ जिले में 'मोहतम' नाम की एक अन्य जाति थी उसे भी अस्पृश्य माना जाता था। सन् १६०६ में गंगाराम जी ने मोहतमों के उद्धार का भी बीड़ा उठाया और उनकी शिक्षा के लिए मोचीवाला ग्राम में एक पाठशाला खोल दी जो आगे चलकर 'आर्य मुसाफिर दलितोद्धार पाठशाला' के नाम से प्रसिद्ध हुई। सिन्ध में वशिष्ठ नाम की अछूत जाति का निवास था। सन् १६११ में हेरपुर नाथनशाह गाँव में वशिष्ठों की शुद्धि करवाई गई जिसके कारण ऊँचे कुलों के हिन्दुओं ने आर्यों का बहिष्कार कर दिया। इनके अत्याचार की हद यह थी कि एक शुद्ध हुए वशिष्ठ का यज्ञोपवीत उतार कर फेंक दिया गया और उसके शरीर पर गरम लोहे से यज्ञोपवीत अंकित कर दिया गया।

परन्तु आर्य समाजी अपने कर्तव्य से पीछे नहीं हटे। पंडित भक्तराम ने मीरपुर(सिन्ध) के क्षेत्र में ३६ गाँवों के वशिष्ठों की शुद्धि की। सिन्ध में १० हजार वशिष्ठों को आर्य बनाया गया। गुरदारसपुर में दो अछूत जातियाँ प्रमुख थीं। रहतिये और डूमने। वहाँ बाबू तेजा सिंह और बाबू काली प्रसन्न चटर्जी, लाहौर के नेतृत्व में सन् १८६३ में रहतियों की शुद्धि शुरू हो गई थी। पर इस जिले में अछूत जातियों में डूमनों की संख्या सबसे अधिक थी। उनमें कार्य करने के लिए पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा ने महाशय रौनक राम की नियुक्ति की। महाशय गोकुलराम भी उनकी सहायता के लिए दीनानगर पहुँच गए। उन दोनों के प्रयत्न से २८ जुलाई १६१२ को ६०० डूमनों का शुद्धि संस्कार बड़ी धूमधाम के साथ सम्पन्न हुआ। महात्मा मुंशीराम तथा पंडित रामभज दत्त भी इस अवसर पर वहाँ उपस्थित थे। जो डूमने शुद्ध हुए थे उनको महाशय कहा जाता था। ये आर्थिक दृष्टि से बहुत निर्बल थे। पंडित रामभज दत्त ने डूमनों को मुसलमानों की ज्यादतियों से बचाने के लिए बीमार होते हुए भी उनके गांवों का दौरा किया और इसी पवित्र कार्य को करते हुए उनकी मृत्यु भी हो गई। वस्तुतः पंडित जी ने अछूतोद्धार के लिए अपने प्राणों की बलि दे दी थी। परन्तु परिणाम यह हुआ कि लगभग एक लाख डूमने शुद्ध होकर महाशय बन गए। गुरदासपुर जिले में एक भी डूमना ऐसा न था जिसे शुद्ध न किया गया हो।

इनकी सामाजिक एवं आर्थिक दशा के सुधार के लिए आर्य समाज ने 'महाशय कौमी सुधार' का गठन किया। महाशयों के लिए पाठशाला भी स्थापित कर दी गई जिनमें दस्तकारी का कार्य भी सिखाया जाता था। आर्य समाज ने तीव्र गति से दलितोद्धार का कार्य प्रारम्भ कर दिया था। पंजाब के सियालकोट, गुरदासपुर और गुजरात जिलों में 'मेघ' नामक अछूत जाति का निवास था। जम्मू कश्मीर रियासत में भी मेघों की आबादी थी। सन् १९२१ की जनगणना में इस जाति के लोगों की संख्या ३ लाख के लगभग थी। यद्यपि मेघों का पेशा कपड़ा बुनना था पर हिन्दू इन्हें अस्पृश्य मानते थे। न उनके हाथ का खाना खाते थे न उन्हें मंदिरों में जाने देते थे और न उन्हें अपने कुंओं से पानी भरने देते थे। मेघों को कोई हिन्दू अपने घर में नौकर भी नहीं रखता था क्योंकि उनके स्पर्श मात्र से ही उन्हें अपवित्र हो जाने का भय बना रहता था।

लाला गंगाराम जी सियालकोट के निवासी थे और वहाँ की आर्य समाज के प्रमुख स्तम्भ थे। उन्होंने मेघों को शुद्ध कर उन्हें हिन्दू समाज में समुचित स्थान दिलाने का संकल्प लिया। सनातनी हिन्दुओं, ईसाईयों और मुसलमानों के भारी विरोध के बावजूद भी आर्यों ने २८ मार्च १९०३ को २०० मेघों की शुद्धि कर दी। शुद्ध हुए मेघों ने नमस्ते करना आरम्भ कर दिया जिससे ये राजपूत और मुसलमान जमींदार बहुत नाराज हुए। उन्होंने इसे अपना अपमान समझा क्योंकि उनकी सोच थी कि नमस्ते से बराबरी का संकेत मिलता है। परिणाम यह हुआ कि राजपूतों ने शुद्ध हुए मेघों को लाठियों से पीटा और मुसलमान जमींदारों ने उन्हें न अपने कुंओं से

पानी भरने दिया और न उन्हें अपने कुंए खोदने दिए।

उन पर झूठे मुकदमे भी चलाए गए। परन्तु आर्य समाजी जी-जान से मेघों की सहायता के लिए कटिबद्ध रहे। वे उनके साथ खान-पान का व्यवहार करते थे। पर्वों और संस्कारों के अवसर पर उनसे मिलते जुलते थे और उनमें शिक्षा के प्रसार के लिए प्रयत्नशील थे। उनके लिए दस्तकारी स्कूल भी खोला गया। इनका नाम 'आर्य भक्त' रख दिया गया और १९१० में 'आर्य मेघोद्धार सभा' भी गठित कर दी गई। इनके लिए स्कूल खोले गए। गुरुकुलों में इनको प्रवेश दिया गया और ये अछूत बालक वेदशास्त्रों की शिक्षा भी प्राप्त करने लगे। आर्य भक्त महाशय केसरचन्द के पुत्र ईश्वरदत्त को गुरुकुल में प्रविष्ट करवाया गया और वहाँ १४ साल की नियमपूर्वक शिक्षा प्राप्त कर १९२५ में वे स्नातक हुए। इनके विवाह उच्च जातियों में हुए और अध्यापक सदृश प्रतिष्ठित पदों पर उनकी नियुक्ति हुयी। इस प्रकार आर्य समाज ने महर्षि दयानन्द के दलितोद्धार के कार्यक्रम को प्रायोगिक रूप से लागू करके यह सिद्ध कर दिया कि अगर वास्तव में जाति भेद को समाप्त करना है, जन्मजनित विषमताओं को समाप्त करना है और अस्पृश्यता के मूल को धूल धूसरित करना है तो ऋषि प्रणीत मार्ग ही कल्याणकारी है।

बलिदानी महाशय रामचन्द्र

बीसवीं सदी के प्रथम चरण में अछूतोद्धार के आन्दोलन को यद्यपि पर्याप्त सफलता प्राप्त हुई परन्तु मार्ग की बाधाएँ और सवर्णों का विरोध इतना उग्र रूप धारण कर लेता था कि उसके कारण आर्य समाजी कार्यकर्त्ताओं को जीवन की बलि तक देनी पड़ती थी। अछूतों के उद्धार के लिए जिन आर्यों ने अपने तन-मन-धन को स्वाहा कर दिया, उनमें जम्मू कश्मीर के कठुआ निवासी महाशय रामचन्द्र को मूर्धन्य स्थान प्राप्त है। भटोहड़ा के मेघों ने पाठशाला स्थापित करने के लिए महाशय रामचन्द्र जी को निमंत्रित किया। जब ओ३म् के झण्डे लिए हुए ये लोग निकले तो राजपूतों ने लाठियाँ लेकर उन पर हमला कर दिया पर रामचन्द्र जी इससे घबराए नहीं। उन्होंने १४ जनवरी १९२३ को पाठशाला खोलने का दिन नियत कर दिया। इस अवसर पर अनेक आर्य सज्जन भटोहड़ा आ गए। वहाँ के राजपूतों ने महाशय रामचन्द्र को इस अछूतोद्धार की जड़ मानते हुए उनके ऊपर १५० की संख्या में भालों एवं बरछों से आक्रमण कर दिया। घायल दशा में उन्हें अस्पताल ले जाया गया जहाँ २० जनवरी १९२३ के दिन उनकी मृत्यु हो गई।

सन् १९२६ में अकेले सियालकोट में ८००० चमारों को आर्य समाज में सम्मिलित कर लिया गया। १०० के लगभग चमारों ने इस्लाम ग्रहण कर लिया था पर आर्य समाज ने उन्हें शुद्ध कर पुनः आर्य बना लिया। 'दयानन्द दलितोद्धार सभा' का निर्माण कर पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा ने बड़े पैमाने पर अछूतोद्धार का कार्य प्रारम्भ कर दिया। अनेक आन्दोलन करके अनेक स्थलों पर अछूतों को कुँओं से पानी प्राप्त करवाने की सुविधा प्राप्त करवाई। जहाँ ऐसा न हो

सका वहाँ उनके लिए नये कुंओं का निर्माण करवाया गया। दलितोद्धारक महर्षि दयानन्द से प्रेरणा पाकर, अछूतोद्धार के सिलसिले में, आर्य समाज के कृतित्व को अत्यन्त संकेतात्मक रूप से ही हमने यहाँ उद्धृत किया है अन्यथा आर्य समाज के कार्य की व्यापकता को देखते हुए आर्य समाज का यह पुरुषार्थ भारत के इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में लिखे जाने योग्य है।

पंजाब के समान उत्तरप्रदेश में भी अछूतोद्धार के लिए आर्य समाज ने गहन प्रयास किए। इन प्रयासों में न केवल अछूत भाईयों को आर्य समाज में प्रविष्ट करवाना था बल्कि उनकी उन्नति का भी पूर्ण प्रयत्न करना सम्मिलित था। अकेले बरेली नगर में डॉ. श्याम स्वरूप के प्रयासों से ३२ कल्याणी पाठशालाएँ स्थापित की गई थी जिनमें अछूत जातियों के बच्चों की पढ़ाई की समुचित व्यवस्था थी। सब स्थानों पर अछूत समझे जाने वाले लोगों को शुद्ध कर यज्ञोपवीत धारण करवाये जाते थे, मांस मदिरा का सेवन न करने की प्रतिज्ञा ली जाती थी। ये शुद्ध हुए व्यक्ति ही भोजन बनाते थे। ये भोजन भी प्रायः कच्चा अर्थात् दाल रोटी होता था जिसे सब

लोग आर्य समाज के सदस्यगण एक पंक्ति में बैठ के प्रीतिपूर्वक ग्रहण करते थे। २६ जून १९२६ के दिन लाला ठाकुरदास के प्रयत्न से नजीबाबाद में दलित वर्ग एवं द्विजातियों का जो सहभोज हुआ वह कभी भुलाया नहीं जा सकता। उस दिन नगर के सभी मुख्य मुख्य कुंओं पर अछूतों ने पानी भरा। सबके सामने आचमन किया और शानदार जुलूस निकालते हुए सब आर्य समाज मंदिर में एकत्रित हुए और छूत-अछूत सभी जातियों के लोगों ने एक पंक्ति में बैठकर भोजन किया। बिजनौर में चमारों को कुंओं में स्वयं पानी भरने का अधिकार है इसके लिए बिजनौर समाज को अनेक मुकदमे लड़ने पड़े। यह मामला हाईकोर्ट तक गया और उसके फैसला आर्य समाज के अनुकूल होने के कारण वह नजीर बन गया। अतएव अछूतों का यह अधिकार सरकार द्वारा स्वीकृत कर लिया गया।

अब गढ़वाल में दलितोद्धार और डोला पालकी आन्दोलन की संक्षिप्त चर्चा कर इस अहम प्रकरण को सीमित करने का प्रयास करेंगे।

गढ़वाल में आर्य समाज के प्रसिद्ध नेता जयानन्द भारतीय द्वारा दलितोद्धार के संदर्भ में जो कार्य किया गया वह उल्लेखनीय है। गढ़वाल में डूम जाति बहुतायत में थी जिन्हें अछूत माना जाता था। इनको इनके सामाजिक अधिकार दिलाने के लिए आर्य समाज द्वारा सघन प्रयत्न किए गए। डूमों के बीच में आर्य समाज ने प्रचार किया और पाँच सौ के लगभग डूमों को यज्ञोपवीत धारण करवाकर आर्य समाज में प्रविष्ट कर लिया गया। लाला लाजपत राय जी ने इन लोगों को शिल्पकार का नाम दिया। वहाँ के सर्वण लोग जो विट कहलाते थे, उन्होंने इन नये आर्यों के साथ बड़ी क्रूरता का बर्ताव किया। उनकी जोत की जमीन उनसे छुड़वा ली और उन्हें मजदूर रखना भी बन्द कर दिया। उनके यज्ञोपवीत तोड़ डाले और आर्य समाज के कार्यकर्त्ताओं एवं प्रचारकों पर भी लाठियों द्वारा आक्रमण किए। गढ़वाल प्रदेश में विवाह के पश्चात् वर वधू को ले जाने के लिए डोली एवं पालकी का प्रयोग किया जाता था। डोली में वधू बैठती थी और पालकी में वर। डोली पालकी का प्रयोग केवल विट कर सकते थे दलित या डूम लोग नहीं। डोली और पालकी का निर्माण डूमों द्वारा किया जाता था और इन्हें कन्धे पर उठाकर ले जाने का कार्य भी उन्हीं से लिया जाता था पर उनके द्वारा डोली पालकी का प्रयोग निषिद्ध था। आर्य समाज में प्रविष्ट हुए शिल्पकारों ने डोला पालकी में अपने वर वधुओं को ले जाना शुरू किया जिसे विट लोग सहन नहीं कर सके। उन्होंने इसे धर्म का विनाश घोषित किया। आर्य शिल्पकारों पर भयंकर अत्याचार किए जाने लगे। जब कोई आर्य वर वधू को डोला पालकी घर ले जाने लगता तो ब्राह्मण एवं राजपूत बारात पर टूट पड़ते। डोला-पालकी को जला देते, भोजन सामग्री नष्ट

कर बारातियों को बुरी तरह पीटते थे। परन्तु इन नव आर्यों ने भी हिम्मत नहीं हारी। सप्ताहों तक जंगलों में बारात रुकी रहती थी पर वे डोला पालकी के उपयोग के आग्रह का परित्याग नहीं करते थे। १२ फरवरी सन् १९४० को श्री खेमसिंह समरियाल के नाती का विवाह श्री मस्तूराम आर्य की पुत्री के साथ होने वाला था। इसमें डोला पालकी की भी व्यवस्था की गई। बारात वाले दिन विटों ने छह हजार की संख्या में बारात पर आक्रमण कर दिया। पालकी को जलाकर नष्ट कर दिया। बारातियों से मारपीट की और उनके यज्ञोपवीत उतार कर जला दिए। जयानन्द भारतीय अस्वस्थ होते हुए भी इस विवाह में सम्मिलित होने के लिए भोराड़ आये हुए थे। विटों ने उनको मौत के घाट उतार देने के निश्चय के साथ उन पर आक्रमण किया। परन्तु उनके अनुयायियों ने जान पर खेलकर उनकी रक्षा की फिर भी आक्रान्ता उनका यज्ञोपवीत उतारने में सफल हो गए। सब कुछ होने पर भी आर्य अपने निश्चय पर दृढ़ थे। वे पालकी के बिना बारात को ले जाने के लिए तैयार नहीं हुए। बारात चिरकाल तक रुकी रही। इस बीच सरकार द्वारा हस्तक्षेप किया गया और पुलिस की सहायता से पालकी के साथ बारात को कन्या पक्ष के गाँव ले जाया गया। सरकारी अदालत द्वारा आर्यों के डोला पालकी के अधिकार को स्वीकृत किया जा चुका था। इस क्षेत्र में आर्य उपदेशकों पर भी कम अत्याचार नहीं हुए। पंडित वेदव्रत आर्योपदेशक के गले में रस्सा डालकर उन्हें पशुओं के समान खींचा गया और उन पर पत्थर फेंके गए। जुलाई १९४५ में ऐसी ही एक डोला पालकी वाली बारात के साथ आ रहे वेदव्रत जी को मारा पीटा गया और ब्रह्मचारी बालकराम जी से ओ३म् का झण्डा छीनकर रस्से से बाँधकर उन्हें थल नदी में डुबाने का प्रयत्न किया गया इसके बाद ब्रह्मचारी बालकराम ने अनशन व्रत प्रारम्भ किया। आर्य समाज द्वारा गढ़वाल में अछूतोद्धार के अभूतपूर्व कार्यों को अन्ततः कांग्रेस के नेता भी उपेक्षित नहीं कर सके। सन् १९४६ में पंडित जवाहर लाल नेहरू ने गढ़वाल दौरे पर बोलते हुए कहा कि किसी भी सूरत में अछूतों पर अत्याचार नहीं होने दिए जायेंगे। आप लोग कांग्रेस को वोट दें या न दें, लेकिन डोला पालकी के अत्याचार किसी भी सूरत में बर्दाश्त नहीं किए जायेंगे। आर्य समाज के डोला पालकी आन्दोलन को अन्ततोगत्वा सफलता मिली और उत्तरप्रदेश सरकार द्वारा 'सामाजिक असमर्थता निवारक कानून' बनाया गया जिससे डूमों से शिल्पकार बने लोगों को वे सब अधिकार प्राप्त हो गए जो सवर्ण विटों को प्राप्त थे।

इस प्रकार आर्यसमाजियों ने जन्म के आधार पर भेदभाव को जड़ से मिटाने की जो दिशा अपने गुरु, दलितों के सच्चे मसीहा महर्षि दयानन्द से पायी थी उसका अनुकरण करते हुए जो अभूतपूर्व कार्य किए उनमें से कुछेक को यहाँ दर्शाते हुए लेखनी को विराम देते हैं।

– अशोक आर्य

चलभाष– ०९३१४२३५१०१, ०८००५८०८४८५

आपकी लोकप्रिय पत्रिका सत्यार्थ सौरभ को सम्बल प्रदान करने हेतु
श्री जी. राजेश्वर (गौड) आर्य, हैदराबाद
ने संरक्षक सदस्यता (₹११०००) ग्रहण की है। अनेकशः धन्यवाद।
– भवानीदास आर्य, मंत्री–न्यास

कर्मयोगी महाशय धर्मपाल
अध्यक्ष - न्यास
सत्यार्थ सौरभ
घर-घर
पहुँचावें।

***** ध्यानाकर्षण *****

मार्च 2020 के अन्तिम सप्ताह में लॉकडाउन घोषित होने तत्पश्चात् कोरोना की विषम परिस्थितियों के कारण, तैयार हो चुका शतांक यथासमय नहीं भेजा जा सका था। इसे अब जनवरी 2021 के साथ संयुक्त रूप में प्रेषित कर रहे हैं। पाठकों की असुविधा के लिए हमें खेद है।

– भवानीदास आर्य

श्री घनश्याम सिंह जी कृष्णावत

विनम्र श्रद्धांजलि

मेवाड़ क्षेत्र को अपनी विलक्षण प्रतिभा से सिंचित करने वाले श्री घनश्याम सिंह जी कृष्णावत का जन्म १८ सितंबर १९५४ ईसवी को ठिकाना थाना, तहसील सराड़ा, जिला उदयपुर (राज.) में हुआ था। आपकी माता का नाम जीत कंवर एवं पिता का नाम रावत रतनसिंह जी था। आपकी शुरूआती शिक्षा गाँव के मिडिल सरकारी स्कूल से हुयी और विश्वविद्यालयी शिक्षा भूपाल नोबल्स से हुयी। व्यापार के क्षेत्र में आपने ट्रेक्टर कम्प्रेशर द्वारा ओपन वेल बनाने का काम शुरू कर अनेक गाँवों में पानी की कमी की समस्या को दूर किया। पश्चात् ईंट-निर्माण तथा अद्भुत मारबल की खोज के पश्चात् उसके खनन के व्यवसाय में आपने नए मानदण्डों को स्थापित किया, तथा देश के प्राकृतिक संसाधनों को देश-विदेश में विख्यात किया। आप खनन व्यवसाय से जुड़े कई संस्थानों के संरक्षक रहे।

आपका वास्तुशिल्प एवं कलात्मक चित्रण शैली में भी बहुत रुझान और ज्ञान था जिसका अभूतपूर्व उदाहरण उदयपुर में स्थित चूण्डा पैलेस है जिसका निर्माण आपके दिशा-निर्देशों एवं अनुभव ज्ञान द्वारा किया गया। जिसको चित्रकार लगभग २० वर्षों से आज भी अपनी चित्रकारी से सजा रहे हैं। आपको हाऊस ऑफ लार्ड्स, लन्दन (यू.के.) में सम्मानित किया गया।

आपमें समाज सेवा के भाव कम उम्र से ही थे। आप द्वारा बहुत सारे मन्दिरों के जीर्ण-उद्धार के कार्यों में भी योगदान रहा। आप बहुत सारे धार्मिक संगठन जैसे शिवदल आदि में संरक्षक थे। आप बहुत धार्मिक और आध्यात्मिक व्यक्तित्व के धनी थे। पूजा, ध्यान, योग आपके दैनिन्दिन जीवन के अंग थे। आपको वर्ष २००७ में राज्यपाल प्रतिभा पाटिल एवं मुख्यमंत्री वसुन्धरा राजे के द्वारा उद्योग एवं सामाजिक सेवा में उत्कृष्ट कार्य करने हेतु सम्मानित किया गया। आप सैनिक कल्याण बोर्ड राजस्थान के भी सदस्य रहे।

आपकी खेल जगत् में भी रुचि रही और विभिन्न संगठनों से भी जुड़ाव रहा और विभिन्न खेलों को भी प्रोत्साहन किया। ६१ वर्ष की उम्र में आपको (Motor neuron disease) की गम्भीर बीमारी जो लाखों में एक में होती है, हुयी। फिर भी समाज सेवा में निरन्तर योगदान देते रहे और बीमारी से भी संघर्ष करते हुए २७ मार्च २०२० को ६७ वर्ष की आयु में देवलोक गमन कर गये। कुछ वर्ष पूर्व उन्होंने न्यास के कार्यों में रुचि दिखाते हुए नवलखा महल आने की स्वीकृति दी थी पर ऐसा हो न सका। उनके निधन पर न्यास के सभी सदस्य यह महसूस करते हैं कि मेवाड़ धरा ने अपने एक सपूत को खो दिया है जिसकी भरपायी सम्भव नहीं है। हम दिवंगत आत्मा को श्रद्धांजलि प्रदान करते हैं।

- श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग
उदयपुर (राज.)

विकास पथ की राही – किरण माहेश्वरी

जिन्होंने अपने जीवन मंत्र - अनवरत कार्यशीलता, व्यवहार में मृदुता एवं विनम्रता और लोकजीवन में पूर्ण पारदर्शिता को जी भर जिया, उन किरण जी को भावभीनी श्रद्धांजलि

हमारी आदरणीय दीदी किरण जी का जन्म २९ अक्टूबर १९६१ के दिन श्री कन्हैया लाल जी देवपुरा के घर में हुआ। स्नातक करने के पश्चात् आपका विवाह १९८१ में श्री सत्यनारायण जी माहेश्वरी के साथ हुआ। सामाजिक सरोकारों से जुड़ाव ही कालान्तर में किरण जी के राजनीति में आगमन का आधार बना। उनकी सम्पूर्ण उन्नयन गाथा में कहीं न कहीं आपके पति श्री सत्यनारायण जी की प्रबल सहयोगी के रूप में भूमिका रही। राजनीति में उच्चतम सोपानों को स्पर्श करने के पश्चात् भी किरण जी को एक संस्कारित भारतीय गृहिणी के रूप में देखकर अच्छा लगता था।

वर्ष १९८५ में रामजन्म भूमि का प्रश्न प्रत्येक राष्ट्रवादी भारतीय के मन को व्यथित कर रहा था। विश्व हिन्दू परिषद् की गंगाजल यात्रा ने देश में जागृति का ज्वार ला दिया था। २४ वर्ष की युवा वय में किरण जी ने गंगाजल यात्रा से अपने लोक जीवन में पहला कदम रखा। शीघ्र ही वे विश्व हिन्दू परिषद् की अति सक्रिय कार्यकर्ता बन गईं।

वर्ष १९९१ में अपने पतिदेव का कार्यस्थल उदयपुर हो जाने के कारण वे उदयपुर आ गईं। यहां भी महिला कार्यकर्ताओं को संगठित कर गांव-गांव में महिला मोर्चा को सक्रिय करने में उन्होंने सक्रिय भागीदारी निभाई। महिला मोर्चा की जिला महामंत्री एवं जिला अध्यक्ष का दायित्व कुशलता से निभाया। वर्ष १९९४ में वे उदयपुर नगर परिषद् मे सर्वाधिक मतों से विजयी होकर सभापति बनी। भ्रष्टाचारमुक्त प्रशासन, जन समस्याओं का त्वरित समाधान, जन साधारण से सतत् सम्पर्क एवं संवाद और सहयोगियों को समुचित सम्मान के कारण पूरे राजस्थान मे किरण माहेश्वरी की ख्याति फैल गई। उदयपुर नगर परिषद् राज्य की सबसे सक्षम एवं आदर्श निकाय बन गई। अपने इसी कार्यकाल में उन्होंने आर्यसमाज की मांग को मानते हुए गुलाबबाग मार्ग का नाम महर्षि दयानंद मार्ग रखा। तभी से वे व सत्यनारायण जी जैसे न्यास और इसकी उन्नति के भावों के साथ जुड़ गए। माता लीलावन्ती सभागार की निर्माण स्वीकृति में उनकी सक्रिय भूमिका रही।

वर्ष २००० में किरण माहेश्वरी को भाजपा महिला मोर्चा का राजस्थान प्रदेश का अध्यक्ष बनाया गया। वे राष्ट्रीय कार्यकारिणी में मनोनीत की गईं।

२००३ में वे राजस्थान भाजपा की प्रथम महिला महासचिव बनीं। २००४ के लोकसभा चुनावों में वे उदयपुर- राजसमन्द संसदीय क्षेत्र से लोकसभा पहुंचीं। वे २००४ में ही भाजपा की राष्ट्रीय सचिव भी बनीं।

वर्ष २००६ में उन्हें महिला मोर्चा का राष्ट्रीय अध्यक्ष बनाया गया। महिला मोर्चा की देहात की साधारण कार्यकर्ता से राष्ट्रीय अध्यक्ष तक यह यात्रा रोमांचकारी, उपलब्धियों से भरपूर एवं सिद्धान्तों के प्रति निष्ठा की यात्रा है। महिला मोर्चा की राष्ट्रीय अध्यक्ष रहते हुए उन्होंने संगठन के प्रत्येक स्तर पर एक तिहाई महिला आरक्षण की नीति स्वीकृत करवाई। भाजपा ऐसा प्रथम राजनीतिक दल बना, जहां संगठन में महिलाओं की व्यापक भागीदारी सुनिश्चित की गई।

वर्ष २०१३ में वे राजसमन्द से विधायक निर्वाचित हुईं। उच्च शिक्षा मंत्री के रुप में अपना दायित्व निभाया। जनसाधारण एवं कार्यकर्ताओं से सतत् सम्पर्क एवं संवाद के कारण पूरे क्षेत्र में उन्होंने राजनेताओं की एक नई परिभाषा गढ़ डाली।

विधानसभा में लोकमहत्व के विषयों पर निर्भिक एवं सारयुक्त अभिव्यक्ति ने उन्हें अग्रणी विधायकों की पंक्ति में प्रतिष्ठित कर दिया। उन्होंने ५ वर्षों में ६५० से अधिक प्रश्न लगाने का कीर्तिमान भी बनाया।

वर्ष २०११ में उन्हें भाजपा की राष्ट्रीय महासचिव मनोनीत किया गया। मार्च २०१३ में उन्हें भाजपा का राष्ट्रीय उपाध्यक्ष मनोनीत किया गया। सत्यनिष्ठा, पारदर्शिता और कथनी-करनी में एकरुपता ही किरणजी का व्यक्तित्व रहा ।

वे संयुक्त राज्य अमेरिका, दक्षिण अफ्रिका, पाकिस्तान, आस्ट्रिया, जर्मनी, मलयेशिया आदि देशों का भ्रमण कर चुकी थीं। मेवाड़ के गौरव को बढाने वाली, जनता के सुख दुख में सदैव भागीदारी करने वाली, अहंकार एवं अभिमान से रहित, सरलता, सहजता एवं सादगी की प्रतिमूर्ति, जन-जन की चहेती एवं लाड़ली, भारतीय राजनीति की आशा किरण आज हमारे मध्य से विलुप्त हो गयीं। एक शून्य का आभास सभी आत्मीयजनों को होना स्वाभाविक है। आपके पति सत्यनारायण जी माहेश्वरी सी.ए.होने के साथ सदैव सामाजिक सरोकारों से जुड़कर अपना यथाशक्ति योगदान देने में तत्पर रहते हैं। उन्होंने सदैव अपनी सहधर्मिणी का साथ दिया ताकि वे आकाश की ऊंचाइयों को चूम सकें। आज किरण जी के जाने से भाई सत्यनारायण जी, उनके पुत्र प्रशांत, पुत्री दीप्ति तथा पुत्रवधू वर्षा एवं सभी आत्मीयजनों के दुःख का अनुभव सहज किया जा सकता है। मात्र ५९ वर्ष की उम्र में यह दैदीप्यमान नेत्री इस नश्वर संसार को छोड़ कर चली गयीं, इस अत्यंत दुखद त्रासदी को विधाता का अटल विधान मानकर स्वीकार करने के अतिरिक्त अन्य कोई मार्ग नहीं है। न्यास के समस्त न्यासीगण, सत्यार्थ सौरभ पत्रिका के सभी सदस्यगण परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्मा को अपनी आनंदमयी गोद में स्थान प्रदान करें तथा शोक संतप्त परिवार को इस महान् दुःख को सहने की क्षमता प्रदान करें।

भवदीय

अशोक आर्य

RNI Registration No. RAJHIN/2012/47777 April2020, January2021 Postal Registration No. RJ/UD/29-107/2019-2021

वे माता और पिता अपने सन्तानों के पूर्ण वैरी हैं, जिन्होंने उनको विद्या की प्राप्ति न कराई। वे विद्वानों की सभा में वैसे तिरस्कृत और कुशोभित होते हैं, जैसे हंसों के बीच में बगुला।

– सत्यार्थ प्रकाश, द्वितीय समुल्लास पृष्ठ ३६

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित
प्रेषण कार्यालय- श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य

मुद्रण दिनांक- प्रत्येक माह की ३ तारीख | प्रेषण दिनांक- प्रत्येक माह की ७ तारीख | प्रेषण कार्यालय- मुख्य डाकघर, चेतक सर्कल, उदयपुर